विषय सूची

अध्याय–1

कुण्डली मिलान की आवश्यकता कब, क्यों और कैसे ? असफलता के कारण

कुण्डली मिलान द्वारा हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि लड़के व लड़की प्रकृति, मनोवृत्ति एवं अभिरुचि क्या है। यदि दोनों की प्रकृति, मनोवृत्ति व अभिरुचि में समानता हो तो ऐसे लोगों में मित्रता व सहज प्रेम हो जाता है। यदि दोनों की प्रकृति व अभिरुचि भिन्न–भिन्न हो तो एक–दूसरे की आलोचना, आलोचना से झगड़ा, मन मुटाव या घृणा पैदा होती है। वे लोग आपस में शत्रु हो जाते हैं। वैवाहिक जीवन कष्टमय हो जाता है।

कई व्यक्तियों का कहना है कि कुण्डली मिलान के बाद भी विवाह असफल होते देखे गये हैं, अनेक दम्पत्तियों में वैचारिक मतभेद रहता है। अनेक युगल तंग आकर तलाक ले लेते हैं। अनेक दम्पत्ति कष्टमय जीवन बिताते हैं।

कक्षा में अध्यापन के समय यह प्रश्न अनेक बार आता है। इसलिये मिलान करने से पहले इस शंका का समाधान आवश्यक हो जाता है। इसके मुख्य कारण हैं।

1. प्रचलित नाम से कुण्डली मिलान करना

अनेक बार देखा गया है कि जन्मपत्री न होने के कारण बहुधा लड़के व लड़की के प्रचलित नाम से ही कुण्डली मिलान कर दिया जाता है। कुण्डली मिलान से पहले की प्रक्रिया की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता। जैसे पारिवारिक साम्य, लड़के–लड़की का साम्य, मित्र साम्य।

यदि एक सम्पन्न परिवार में पली लड़की का गरीब परिवार के लड़के के साथ विवाह कर दिया जाये तो वह लड़की कैसे सुखी अनुभव कर सकती है। यदि पढ़े–लिखे लड़के का विवाह अनपढ़ लड़की के साथ कर दिया जाये तो दोनों की प्रकृति व अभिरुचि में भिन्नता आना स्वाभाविक हो जाता है। इसलिये कुण्डली मिलान से पहले पारिवारिक साम्य व लड़के–लड़की का साम्य का विचार आवश्यक है।

दूसरे प्रचलित नाम से कुण्डली मिलान का भी औचित्य नहीं। विवाह के लिये तो जन्म कुण्डलियों का ही मिलान होना चाहिये। उदाहरण के लिए एक लड़के या लड़की के अनेक नाम हो सकते हैं। माता–पिता प्यार से उसे किसी भी नाम से पुकार सकते हैं तथा स्कूल में उसका और नाम होता है तथा व्यवसाय में केवल द्वितीय नाम का। जैसे एक लड़के को घर में है हैप्पी तथा स्कूल में हर्ष तथा व्यवसाय में कुरसीजा के नाम से जाना जाता है। किस नाम से कुण्डली मिलान करेंगे? तीनों नामों से वह सोते हुए भी उत्तर देता है। इसलिए कुण्डली मिलान नाम से नहीं हो सकता। अशुभ दोष मिलान कुण्डली से ही जाना जा सकता है। आयु, दशा, मारक ग्रह आदि सब कुण्डली से ही जाने जा सकते हैं। नाम से कुण्डली मिलान केवल लीक को पीटना है अन्यथा अशास्त्रीय व तर्क विहीन है।

2. जन्मकुण्डली का ठीक न होना

पहले समय में कुण्डलियां हाथ से बनने के कारण ठीक नहीं हुआ करती थीं। मंदिरों में बैठे पण्डित गणित में निपुण नहीं हुआ करते थे। ज्योतिष परम्परा का विषय था। परन्तु आजकल कम्प्यूटर आ जाने के बाद यह आक्षेप किसी सीमा तक समाप्त हो गया है। परन्तु फिर भी जिस कम्प्यूटर से जन्मपत्री बनी है, उसके प्रोग्राम का ध्यान रखना आवश्यक है। इसलिये दो जगह से अलग–अलग प्रोग्रामों से कुण्डली बनवा कर मिलान कर लेना चाहिये।

कुण्डली मिलान करने से पहले कुण्डली ठीक है उसकी जांच कर लेनी चाहिये। यदि कुण्डली ही ठीक नहीं तो मिलान कहां से ठीक होगा। इसलिए जातक का जन्म समय, तिथि व जन्म स्थान का पूरा ध्यान रखना चाहिये।

3. जिस किसी से कुण्डली मिलान करवाना

कुण्डली मिलान के लिए एक शिक्षित निपुण व अनुभवी ज्योतिषी की आवश्यकता होती है। ज्योतिष–शास्त्र से अनभिज्ञ ज्योतिषियों की संख्या हमारे देश में बहुत अधिक है जो केवल सारिणी देख कर ही नक्षत्र मिलान कर देते हैं। इस प्रकार इसे 5 मिनट में एक ज्योतिषी नामधारी दो अपरिचित युवकों के भावी भाग्य व वैवाहिक जीवन का फैसला कर देता है और आश्चर्य तो यह है कि हम भी उसे मान लेते हैं। यदि आप किसी अनुभवी डाक्टर के पास जाएं और उससे कहें कि उसे कुछ समय से खांसी की शिकायत है तो वह रक्त, थूक आदि की जांच करवाएगा तथा छाती का एक्स–रे भी निकलवाएगा। तब जाकर वह रोग का निदान करेगा। यहां तो जीवन भर के सुख व आनन्द का फैसला है वो हम कुछ ही मिनटों में करवाना चाहते हैं। विडिम्बना तो यह है कि आज प्रत्येक कर्मकाण्डी पण्डित, कथावाचक, पुजारी, साधु व सन्यासी स्वयं को ज्योतिषी कहता है। लोगों की जिज्ञासा का लाभ उठाता है।

एक ज्योतिषी का गणितज्ञ होना, उस के पास गोचर का पता होना तथा ज्योतिष–शास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक होता है। उसका शिक्षित होना आवश्यक है। बिना शिक्षा के ज्योतिष करना लोगों के जीवन से खेलना है। परन्तु इसको कहीं पर सजा के योग्य नहीं माना गया है। कोई भी व्यक्ति मरीज को दवाई नहीं दे सकता जब तक उसके पास राज्य का रजिस्ट्रेशन नहीं है। परन्तु, ज्योतिषी को किसी भी प्रकार के रजिस्ट्रेशन की आवश्यकता नहीं। लोगों के जीवन का फैसला एक अनपढ़ पुजारी भी कर सकता है।

हमारे विचार में जीवन का फैसला कुण्डली मिलान से होता है।

इसलिए शिक्षित ज्योतिषी से ही कुण्डली मिलान करवानी चाहिए जैसे कहा जाता है कि अनुभवी डाक्टर के हाथ से मरना अच्छा है परन्तु अशिक्षित व्यक्ति की औषधि से जीवन बचाना अशुभ है। अपने को अशिक्षा के आरोप से बचाने के लिए वे अंतर्ज्ञान जैसे शब्दों का सहारा लेते हैं। अनुभवी शिक्षित व्यक्ति का अन्तर्ज्ञान व एक अनपढ़ अशिक्षित सन्यासी का अन्तर्ज्ञान में बहुत अन्तर है। शब्दों के माया जाल से हमेशा बचना चाहिये। इसलिये कुण्डली मिलान जैसे महत्वपूर्ण कार्य को अनुभवी, शिक्षित, ज्योतिष ज्ञान में निपुण व्यक्ति से ही करवाना चाहिये। इसका प्रभाव नवयुवकों के भावी जीवन पर पड़ता है। यदि लड़का–लड़की सुखी वैवाहिक जीवन बिताते हैं तो उनकी सन्तान भी मेधावी उत्पन्न होती हैं। किसी ने ठीक कहा है कि सुखी परिवार सात पीढ़ियों को सुखी करता है। तीन पीढ़ियां पहले को स्वयं व तीन पीढ़ियां आने वाली। एक बुद्धिमानी से उठाया हुआ कदम इतना सुखदायी होता है।

जिस घर में स्नेह और प्रेम का निवास है, उस घर में धर्म का साम्राज्य होता है; जो सम्पूर्णतया सन्तुष्ट है, उसके सब उद्देश्य सफल होते हैं।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. क्या कुण्डली मिलान प्रचलित नाम से करनी चाहिये? यदि नहीं तो क्यों?
2. क्या केवल कुण्डली मिलान सुखी दाम्पत्य जीवन दे सकता है?
3. कुण्डली मिलान में क्या–क्या दोष हो सकते हैं?
4. क्या प्रत्येक व्यक्ति कुण्डली मिलान कर सकता है?

अध्याय–2

कुण्डली मिलान क्या है?

दो सम्भावित वर व कन्या की जन्मकुण्डली के द्वारा ग्रह स्थिति और नक्षत्र मिलान के आधार पर उनकी प्रकृति, मनोवृत्ति व अभिरुचि में साम्यता तथा परस्पर पूरकत्व का विचार कुण्डली मिलान कहा जाता है। समान मनोवृत्ति व समान अभिरुचि के वर व कन्या का आपस में सहज आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। जैसे दूध में पानी मिल जाता है। फिर आग पर चढ़ने पर दूध को हानि होने से पहले पानी अपनी बलि देता है। पानी की बली देखकर दूध आग को बुझाने के लिये उबल पड़ता है। फिर उसमें पानी के छींटे देने पर दूध व पानी का मिलन होता है। दूध शान्त हो जाता है। इसी प्रकार वर–कन्या एक–दूसरे के पूरक हो जाते हैं। एक–दूसरे के लिये त्याग करने के लिए तैयार रहते हैं। वैवाहिक जीवन सुखमय व समृद्ध रहता है।

कुण्डली मिलान के दो भेद हैं– 1. ग्रह मिलान एवं 2. नक्षत्र मिलान।

1. ग्रह मिलानः इसमें हम अशुभ ग्रहों के दोषों का विवेचन करते हैं। लड़के के अशुभ प्रभाव या दोष लड़की के अशुभ प्रभाव से ज्यादा होने चाहिये। यदि लड़के के अशुभ गुण लड़की के अशुभ गुणों से कम है तो विवाह नहीं करना चाहिये। इसलिये उसका विवेचन गुण मिलान से पहले करते हैं।

2. **नक्षत्र मिलानः** ग्रह मिलान के बाद हम नक्षत्र मिलान करते हैं। नक्षत्र मिलान में वर–कन्या को प्रकृति, मनोवृत्ति व अभिरुचि, यौन सम्बन्ध, सन्तान व भाग्य आदि का विवेचन नक्षत्रों के द्वारा करते हैं।

कई ज्योतिषी ग्रह मिलान करते ही नहीं हैं। परन्तु आजकल ग्रह मिलान के साथ–साथ दशा साम्य, दशा सन्धि व आयु का अध्ययन भी आवश्यक हो गया है। दशा साम्य दशा, सन्धि व आयु का अध्ययन भी नक्षत्र मिलान से पहले कर लेना चाहिये। इस अध्याय में हम केवल नक्षत्र मिलान का अध्ययन करेंगे।

नक्षत्र मिलान में मुख्यतः निम्नलिखित 8 बातों का अध्ययन किया जाता है।

1. वर्ण 2. वश्य 3. तारा 4. योनि 5. ग्रह मैत्री 6. गण 7. भकूट 8. नाड़ी इसको अष्टकूट भी कहते हैं। प्रत्येक कूट को निश्चित अंक दिये गये हैं जो इस प्रकार से हैं। इसे गुण भी कहते हैं।

क्र. कूट	अंक	क्र. कूट	अंक
1. वर्ण	1	5. ग्रह मैत्री	5
2. वश्य	2	6. गण	6
3. तारा	3	7. भकूट	7
4. योनि	4	8. नाड़ी	8
		कुल योग	36

वर्ण कूट को एक व नाड़ी को आठ गुण क्यों दिये हैं। इसका क्या महत्व है हमें नहीं मालूम, परन्तु शास्त्रों में ऐसा ही हम पाते हैं। जिस वर–कन्या के गण, भकूट व नाड़ी नहीं मिलती, उसके 21 गुण कम हो जाते हैं। यदि शेष 5 गुण मिले तो उसका कोई महत्व नहीं। नाड़ी जातक के स्वास्थ्य का प्रतिनिधित्व करती है, स्वास्थ्य नहीं तो कुछ भी नहीं। शायद इसी महत्व को दर्शाने के लिये उसको सबसे ज्यादा अंक दिये गये हैं। **भकूट** जातक के स्वभाव व एक–दूसरे के प्रति अभिरुचि व आकर्षण को दर्शाता है। इसलिये इसको 7 अंक दिये गये हैं। **गण** जातक की प्रकृति को दर्शाता है। जातक, सत्व, रजस या तामसिक प्रकृति का है। फिर उनका आपस में मिलाना ये तीन ऐसे गुण हैं जिनका मिलान होना जरूरी है। सबसे अधिक महत्व स्वास्थ्य को–नाड़ी, दूसरा महत्व भकूट को जिससे दोनों को अभिरुचि मानसिक सोच तीसरा–प्रकृति। तीनों को विस्तार से अध्ययन बाद के पृष्ठों में करेंगे।

उत्तर भारत के लोग अष्टकूट का विचार करते हैं। दक्षिण भार के लोग दस कूटों का विचार करते हैं तो अन्य अठारह कूटों का भी विचार करते हैं। परन्तु यदि अष्ट कूटों का मिलान पारिवारिक साम्य लड़का–लड़की का साम्य,मानसिक आरोग्यता, दशा साम्य व दशा सन्धि, आयु के साथ किया जाय तो इससे भी गुजारा हो जाता है। विस्तार की कोई सीमा नहीं।

कम से कम अष्टकूट व ग्रह दोष साम्य, पारिवारिक साम्य, लड़के–लड़की का साम्य, दशा साम्य, मानसिक आरोग्यता तथा आयु का विचार आवश्यक हो जाता है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. अष्ट–कूट के अलावा किन–किन बातों का मिलान करना चाहिये?

2. उत्तर भारत में कितने कूटों का मिलान किया जाता है?

3. दक्षिण भारत में कितने कूटों का मिलान किया जाता है?

4. अष्ट–कूट के कूटों के नाम लिखो व अंक लिखो?

5. नाड़ी दोष को 8 अंक क्यों दिये गए ?

अध्याय–3

वर्णकूट विचार

अधिकतम अंक–1

वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र से उनकी राशि का निश्चय करना चाहिये। ज्योतिष में राशियों का चार वर्णों में बांटा गया है 1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. शूद्र। **इसका निर्धारण जन्म राशि के आधार पर किया जाता है।** जिसका जन्म कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हुआ हो तो उसका वर्ण ब्राह्मण होता है। इसी प्रकार अन्य जन्म राशि के आधार पर वर्ण का निर्णय किया जाता है। उसकी तालिका इस प्रकार होगी। ब्राह्मण जातक के दूसरों के साथ मिलकर चलने को दर्शाता है। क्षत्रिय अधिकार, वैश्य (अपना स्वाथ) शूद्र दव कर चलने को दर्शाता है। वर्ण जितक के व्यवहार को दर्शाता है।

वर्णज्ञानार्थ तालिका

वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
राशियों	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

इस प्रकार वर एवं कन्या के वर्ण का निश्चय करके उसके गुण का विचार करते हैं। यदि कन्या के वर्ण से वर का वर्ण उच्च का हो तो गुणांक 1 मिलता है। वर एवं कन्या का वर्ण एक हुआ तो कई विद्वान ज्योतिषी 1/2 अंक देते हैं। परन्तु सुविधा के लिए 1 अंक ही मानते हैं। यदि वर के वर्ण से कन्या का वर्ण उच्च का हो तो शून्य अंक मिलता है। कारण यह कि **वर्ण जातक का व्यवहार को बतलाता है।** वर का व्यवहार कन्या के व्यवहार अच्छा होना चाहिए क्योंकि कन्या वर के अनुसार ही व्यवहार करती है। यदि वर का व्यवहार अच्छा है तो व कन्या को नियन्त्रण में रख कर परिवार में बड़ों का आदर तथा छोटों को प्यार बनायें रख सकता है। यह गुण वित्त साम्य के प्रकार का है। वित्त साम्य में वास्तविक स्थिति का पता चलता है व **वर्ण गुण से शारीरिक क्षमता का पता चलता है** जो पुराने समय में संयुक्त परिवार की आवश्यक थी। आज के समय में वित्त साम्य आवश्यक है।

` वर्ण गुणांक बोधक तालिका

	वर	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
कन्या का वर्ण	ब्राह्मण	1	0	0	0
	क्षत्रिय	1	1	0	0
	वैश्य	1	1	1	0
	शूद्र	1	1	1	1

उदाहरण मान लीजिए की लड़के की जन्मकुण्डली इस प्रकार से है।
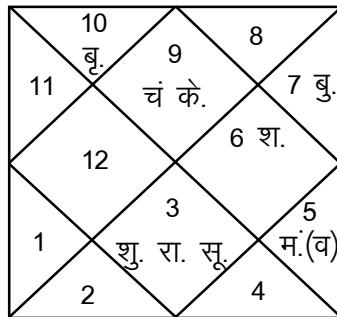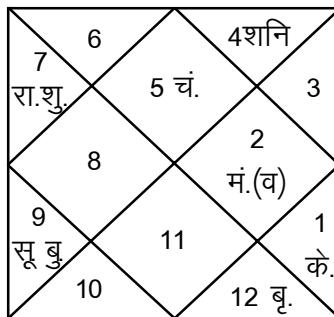
लड़की की जन्मकुंडली
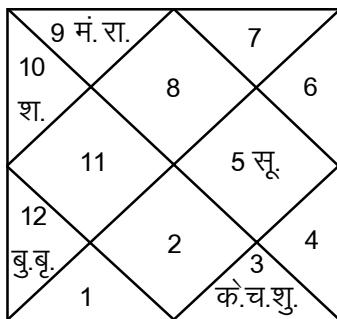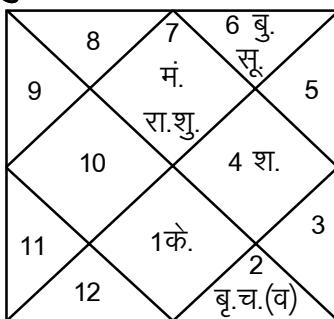
उदाहरण कुण्डली

लड़के की कुण्डली में चंद्रमा सिंह राशि में है इसलिये लड़के का वर्ण हुआ क्षत्रिय लड़की की कुण्डली में चंद्रमा वृष राशि में स्थित है इसलिए लड़की का वर्ण हुआ वैश्य।

लड़के का वर्ण लड़की के वर्ण से उच्च है इसलिए उसको अंक मिले = 1

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. वर्ण मिलान कैसे करते हैं?
2. किसका वर्ण ऊँचा होना चाहिए?
3. वर्ण क्या बतलाता है?
4. जातक के दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करेगा किस कूट से मालूम करते हैं?
5. लड़के के वर्ण के ऊँचे होने से क्या लाभ है?

अध्याय–4

वश्य दोष विचार

अधिकतम अंक–2

वश्य के द्वारा हम लड़के–लड़की की प्रकृति को जानने की कोशिश करते हैं। पुराने समय में व्यक्ति जानवरों के सम्पर्क में अधिक रहता था। उनकी प्रकृति को वह अच्छी प्रकार समझता था। इसलिए ज्योतिष में मनुष्य की प्रकृति को जानवरों के माध्यम से प्रकट किया गया है। ज्योतिष में जातक की प्रकृति को पांच भागों में बांटा है।

1. चतुष्पद — (जानवर) पालतु जानवर जो केवल अपने बारे में सोचता है।
2. द्विपद — (मानव) जो समाज व दूसरों के बारे में भी सोच रखता है।
3. जलचर — जो हमेशा बेचैन रहता है।
4. वनचर — जो अकेला रहना पसंद करता है व जरूरत के समय हिंसक भी हो जाता है।
5. कीट — जो हमेशा अपनी भावनाओं को छिपा कर रखता है और मौका पड़ने पर डंक मार देता है।

मेष, वृष, सिंह, धनु का उत्तरार्ध तथा मकर का पूर्वार्ध **चतुष्पद राशियां** मानी गई है।

इसमें सिंह राशि वनचर होते हुए भी चतुष्पद मानी गई है।

मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध तथा कुम्भ राशि को **द्विपाद राशि** या माना गया है। कर्क, मकर का उत्तरार्द्ध राशि **जलचर राशियां** हैं। इनमें वृश्चिक कीट राशि मानी गई हैं।

उक्त पांचों वश्य अपने स्वभाव और व्यवहार के कारण 4 वर्गों में विभक्त किये गये हैं। 1. वश्य 2. मित्र 3. शत्रु 4. भक्ष्य जैसे वृश्चिक बिच्छू को छोड़ कर अन्य सब राशियां सिंह के वश में रहने के कारण उसकी वश्य मानी गई है। किन्तु बिच्छू बिल में रहने के कारण सिंह के बस में नहीं होता। सिंह को भी किसी प्रकार मानव चतुष्पद को अपने वश में कर लेता है। परन्तु ज्योतिष में सिंह को छोड़ कर सब अन्य पशु मानव के वश में माने गए हैं। परन्तु मानव जलचर को खा जाता है। प्रत्येक वश्य को अपने वर्ग से मित्रता तथा घातक वर्ग से शत्रुता होती है। पहले वश्य–बोधक चक्र से वर व कन्या का वश्य निश्चय किया जाता है। उपरान्त उनके स्वभाव के अनुसार उनमें वश्य भाव मित्र भाव शत्रु भाव या भक्ष्य भाव को वश्य गुण बोधक चक्र में गुण दिये जाते हैं, यदि दोनों में मित्रता हो तो 2 गुण शत्रुता हो तो एक 1 गुण; एक वश्य और दूसरा भक्ष्य होने पर गुण, एक; शत्रु व दूसरा भक्ष्य होने पर 0 गुण दिया जाता है।

वश्य–बोधक तालिका

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	मानव
राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
वश्य	मानव	कीट	मानव पूर्वार्ध	चतुष्पद	मानव उत्तरार्ध	जलचर उत्तरार्ध

वश्यगुण–बोधक तालिका

	वर के वश्य	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	कीट
कन्या के वश्य	चतुष्पद	2	1	1	½	1
	मानव	1	2	½	0	1
	जलचर	1	½	2	1	1
	वनचर	0	0	1	2	0
	कीट	1	0	1	0	2

उदाहरण में लड़के की कुण्डली में चंद्रमा सिंह राशि में स्थित है इसलिए उसका वश्य वनचर हुआ। लड़की की कुण्डली में चंद्रमा वृष राशि में स्थित है इसलिए उसका वश्य चतुष्पद हुआ। वनचर के लिए चतुष्पद कन्या कर गुण उदाहरण दोः भाग लड़की राशि कर्क व ½ (आधा) लड़के की राशि सिंह है। कर्क राशि होने के कारण उसका वश्य जलचर है तथा लड़का की राशि सिंह होने के कारण उसका वश्य वनचर है। वश्य गुण बोधक तालिका में मिलान के बाद उसका अंक मिला एक। वश्य गुण जातक की प्रकृति व अभिरुचि को दर्शाता है। प्रत्येक जातक अपनी प्रकृति तथा अभिरुचि के अनुसार कार्य करता है। व्यवहार उसी पर आधारित होता है। इसलिए आज के संदर्भ में जब लड़का–लड़की पढ़े–लिखे व वित्त प्रबन्ध में स्वतन्त्र है इसका महत्व और भी अधिक हो जाता है परन्तु हमारे ऋषि मुनियों ने इस गुण को केवल 2 अंक प्रदान किये हैं। देश काल व पात्र के अनुसार इसमें परिवर्तन होना चाहिए। सब को समान अंक मिलने चाहिए, माना कि सब गुणों को समान अंक 4 देते हैं तो तालिका बनेगी।

माना कि स्वास्थ्य आवश्यक अंग है। बिना स्वास्थ्य के किसी सुख का भोग सम्भव नहीं है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य की भी आवश्यक है। बिना मानसिक स्वास्थ्य के भी किसी भी पदार्थ से स्वाद का अनुभव नहीं होता। इसके साथ–साथ सुख–सुविधाओं का भी अपना ही महत्व है। इसलिये सबको महत्व दिया जाना चाहिये। प्रत्येक गुण के समान अंक होने चाहिये। कितने गुण मिले उसको महत्व देना उचित होगा। केवल अंको को महत्व बदली हुई परिस्थितों में उचित नहीं है। समान अंको की तालिका निम्न प्रकार से बनाई जा सकती है।

आधुनिक वश्य–गुण बोधक चक्र

	वर ⟶	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	कीट
कन्या	चतुष्पद	4	2	2	1	2
	मानव	2	4	1	0	0
	जलचर	2	1	4	2	2
	वनचर	0	0	2	4	0
	कीट	2	0	2	0	4

वश्य गुण मिलने से लड़के–लड़की का एक–दूसरे के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। एक–दूसरे के सोचने व चाहने का तरीका एक हो जाता है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. वश्य कैसे मिलाते हैं?

2. वश्य जातक में क्या दर्शाता है?

3. क्या अष्ट–कूट के कूटों को अलग–अलग अंक देना आवश्यक है। यदि नहीं तो क्यों?

अध्याय–5

तारा कूट विचार

अधिकतम अंक–3

तारा–तारा नौ प्रकार की होती है।

1. जन्म 2. सम्पत् 3. विपत् 4. क्षेम 5. प्रत्यरि 6. साधक 7. वध 8. मित्र 9. अति मित्र। इन ताराओं के नाम व फल समान माने गये हैं। इन ताराओं में से 3,5,7 तारा अर्थात विपत्, प्रत्यरि व वध तारा अशुभ प्रभाव के कारण अशुभ मानी गई है।

कुण्डली मिलान में हमारे ऋषि–मुनियों ने तारा को अधिकतम 3 अंक दिये हैं। तारा के शुभाशुभत्व को जानने के लिए वर के जन्म नक्षत्र से लेकर कन्या के जन्म नक्षत्र तक (दोनों को भी साथ में गिनना है) गिनना चाहिये। प्राप्त नक्षत्रों की संख्या को नौ से भाग दें। जो शेष बचे उस शेष से तारा संख्या का ज्ञान प्राप्त होता है। एक का अर्थ है जन्म, दो का अर्थ है सम्पत, तीन का अर्थ है विपत् आदि तारा होती है। इसी प्रकार कन्या के जन्म नक्षत्र से लेकर वर के जन्म नक्षत्र तक (दोनों नक्षत्रों को भी साथ में गिनना है) गिन कर नौ से भाग दें, शेष से तारा की संख्या का बोध होता है। इस प्रकार दोनों की तारा का निर्धारण कर लेना चाहिये। यदि दोनों की तारा शुभ है तो पूरे 3 अंक दिये जाते हैं। यदि दोनों को तारा अशुभ है अर्थात् 3, 5, 7 तारा है– विपत्, प्रत्यरि तथा वध है–तो शून्य अंक प्रदान किया जाता है। यदि एक शुभ व दूसरी अशुभ हैं तो 1.5 अंक प्रदान किया जाता है।

तारा गुणांक बोधक तालिका

	तारा संख्या		1	2	3	4	5	6	7	8	9
		वर की तारा	जन्म	सम्पत	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अति मित्र
कन्या की तारा	जन्म		3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	सम्पत्		3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	विपत्		1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	क्षेम		3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	प्रत्यरि		1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	साधक		3	3	1.5	3	15	3	1.5	3	3
	वध		1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	मित्र		3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	अतिमित्र		3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

उदाहरण–कुण्डली में लड़के का नक्षत्र उ. फा. (12) तथा लड़की का नक्षत्र रोहिणी (4) है। लड़के के जन्म नक्षत्र उत्तर फाल्गुनी (12) से लड़की के जन्म नक्षत्र रोहिणी (4) तक गिनने से जो संख्या प्राप्त हुई = 20 ÷ 9 शेष 2 जो शुभ तारा है।

इसी प्रकार लड़की के नक्षत्र रोहिणी से लड़के के नक्षत्र उत्तर फाल्गुनी तक गिनने पर संख्या प्राप्त = 9 ÷ 9 = शेष = 0 अर्थात् 9 जो शुभ दोनों तारा शुभ होने से अधिकतम अंक प्राप्त हुए।

दक्षिण भारत में तारा कूट को दीनकूट भी कहते हैं। परन्तु दक्षिण भार में 'पर्याय' का भी महत्व है। 27 नक्षत्रों को तीन भागों में बांटा जाता है और एक भाग में नौ नक्षत्र होते हैं। इन भागों को पर्याय कहते हैं। पहले पर्याय को जन्म पर्याय कहते हैं दूसरे को अनु–जन्म पर्याय कहते हैं। तथा तीसरे पर्याय को त्रि जन्म पर्याय कहते हैं।

उदाहण कुण्डली में लड़की का जन्म नक्षत्र रोहिणी व लड़के का जन्म नक्षत्र उत्तर फाल्गुनी है।

	क्र.सं.	**जन्म पर्याय**	**क्र.सं.**	**अनुजन्म पर्याय**	**क्र.सं.**	**त्रिजन्म पर्याय**
	1.	रोहिणी	10.	हस्त	19.	श्रवण
	2.	मृगशिरा	11.	चित्रा	20.	धनिष्ठा
	3.	आर्द्रा	12.	स्वाती	21.	शतभिषा
	4.	पुनर्वसु	13.	विशाखा	22.	पूर्वभाद्र
	5.	पुष्य	14.	अनुराधा	23.	उत्तरभद्र
	6.	अश्लेषा	15.	ज्येष्ठा	24.	रेवती
	7.	मघा	16.	मूला	25.	अश्विनी
	8.	पूर्वफाल्गुनी	17.	पूर्वाषाढ़	26.	भरणी
	9.	उत्तरफाल्गुनी	18.	उत्तराषाढ़	27.	कृत्तिका

रोहिणी जन्म नक्षत्र कहलाता है, हस्त अनुजन्म नक्षत्र व श्रवण त्रि जन्म नक्षत्र कहलाता है।

उत्तर भारत व दक्षिण भारत दोनों में जन्म नक्षत्र से 3,5,7, नक्षत्र अशुभ माना है। परन्तु दक्षिण भारत में इसमें कुछ अपवाद भी दिये हैं। अनुजन्म पर्याय में 3,5,7 में निम्नलिखित अपवाद है।

अपवाद नियम–

1. (क) अनु जन्म पर्याय में तीसरे नक्षत्र का पहला पद विवाह के लिये अशुभ है, परन्तु 2, 3, 4, पद अशुभ नहीं, यदि दूसरे कूट मिलते हैं।

(ख) 5वें नक्षत्र का चतुर्थ पद अशुभ है तो 1, 2, 3 पद अशुभ नहीं।

(ग) 7वें नक्षत्र का तीसरा पद अशुभ है, शेष नहीं।

जब लड़की का जन्म नक्षत्र रोहिणी है तो लड़का स्वाती नक्षत्र का 2, 3, 4 पद शुभ है अनुराधा नक्षत्र का 1, 2, 3 पद शुभ है मूल नक्षत्र का 1, 2, 4 पद शुभ है।

अपवाद नियम 2

ऊपरलिखित अपवाद लड़के के जन्म नक्षत्र से लड़की के जन्म नक्षत्र की संख्या पर भी प्रयोग किया जाएगा।

अपवाद नियम 3

त्रि जन्म पर्याय में विपत, प्रत्यरि व वध तारा के किसी भी पद का दोष नहीं होता है। दोनों की तारा शुभ होती है।

केवल वध तारा (7) के लिए कुछ विशेष नक्षत्र दिये हैं जिनके साथ कुण्डली मिलान नहीं करना चाहिये वे हैं–

वध तारा दोष तालिका

क्रम	लड़की	लड़का	परिणाम
1.	अश्विनी	पुनर्वसु	लड़कियां ज्यादा
2.	भरणी	पुष्य	सौभाग्य
3.	कृत्तिका	अश्लेषा	मृत्यु
4.	रोहिणी	मघा	लड़के ज्यादा
5.	मृगशिरा	पूर्वफाल्गुनी	मृत्यु या अलग होना
6.	आर्द्रा	उत्तरफाल्गुनी	सुख
7.	पुनर्वसु	हस्त	पारिवारिक सुख
8.	पुष्य	चित्रा	सुख
9.	अश्लेषा	स्वाती	मृत्यु
10.	मघा	विशाखा	पुनर्विवाह
11.	पूर्वफाल्गुनी	अनुराधा	सुख
12.	उ.फाल्गुनी	ज्येष्ठा	झगड़े व पृथकत्व
13.	हस्त	मूल	हानि वगैरह
14.	चित्रा	पूर्वाषाढ़	मृत्यु
15.	स्वाती	उत्तराषाढ़	लड़कियां ज्यादा
16.	विशाखा	श्रावण	शत्रुता
17.	अनुराधा	धनिष्ठा	मृत्यु

18.	ज्येष्ठा	शतभिषा	लड़ाई व पृथकता
19.	मूला	पूर्वभादा	सौभाग्य
20.	पूर्वाषाढ़	उत्तरभाद्र	प्रेम
21.	उत्तराषाढ़	रेवती	पृथकता
22.	श्रावण	अश्विनी	मृत्यु
23.	धनिष्ठा	भरणी	मृत्यु
24.	शतभिषा	कृत्तिका	मृत्यु
25.	पूर्वभाद्रा	रोहिणी	लड़के अधिक
26.	उत्तरभाद्रा	मृगशिरा	मृत्यु
27.	रेवती	आर्द्रा	झगड़े व पृथकता

महर्षि कश्यप ने उपरलिखित वध तारा के मिलान को तालिका दी है। इसमें हम पाते हैं कि बारह नक्षत्रों के योग शुभ हैं जो वध तारा से प्रभावित नहीं माने जाते हैं। वे हैं:

	कारण	वर
1.	अश्विनी	पुनर्वसु
2.	भरणी	पुष्य
3.	रोहिणी	मघा
4.	आर्द्रा	उत्तरफाल्गुनी
5.	पुनर्वसु	हस्त
6.	पुष्य	चित्रा
7.	पूर्वफाल्गुनी	अनुराधा
8.	स्वाती	उत्तराषाढ़
9.	मूला	पूर्वभाद्र
10.	पूर्वाषाढ़	उत्तरभाद्र
11.	उत्तराषाढ़	रेवती
12.	पूर्वभाद्र	रोहिणी

महर्षि कश्यप के अनुसार यदि लड़की का नक्षत्र भरणी है तथा लड़के का नक्षत्र पुष्य है तो दोनों नक्षत्र एक दूसरे से वध तारा पर है परन्तु तालिका के अनुसार इस मिलान का परिणाम **"सौभाग्य"** है इसलिये ताराकूट शुभ है। इस प्रकार बारह के बारह मिलान शुभ है। वध तारा कोई दोष नहीं है।

अपवाद नियम 4

हस्त व तीन उत्तरा (उत्तरफाल्गुनी उत्तराषाढ़ व उत्तरभाद्र) नक्षत्रों के लिये विपत् (3) व प्रत्यरि (5) दोष प्रयोग नहीं होगा। माना कि लड़की का जन्म नक्षत्र हस्त है व लड़के का जन्म नक्षत्र स्वाती जो 3 रा नक्षत्र है या अनुराधा जो लड़की के नक्षत्र से 5 वां है, के साथ विवाह शुभ है। तारा दोष नहीं लगेगा।

अपवाद नियम 5

यदि लड़के या लड़की का जन्म नक्षत्र (1) मृगशिरा, (2) मघा (3) स्वाती या (4) अनुराधा हो तो तारा दोष नहीं लगता।

तारा दोष में इन 5 पांच अपवादों का ध्यान रखना चाहिये।

3.2 एक नक्षत्र अपवाद नियम 6

यदि लड़के व लड़की का नक्षत्र एक हो तो उनकी कुण्डली मिलान के कुछ विशेष नियम होते हैं। 27 नक्षत्रों में से 8 नक्षत्र ऐसे हैं जिनको विवाह के लिए अशुभ माना जाता है। वे हैं (1) भरणी, (2) अश्लेषा, (3) स्वाती (4) ज्येष्ठा, (5) मूला, (6) धनिष्ठा (7) शतभिषा (8) पूर्वभाद्र।

यदि लड़के व लड़की का नक्षत्र एक हो व ऊपरलिखित नक्षत्रों में हो तो वह विवाह के उपयुक्त नहीं माने जाते।

यदि शेष 19 नक्षत्र में से कोई भी नक्षत्र लड़के–लड़की का एक हो तो वह विवाह के लिये उपयुक्त है।

यदि दोनों का जन्म नक्षत्र रोहिणी, (2) आर्द्रा, (3) मघा, (4) हस्त, (5) विशाखा, (6) श्रावण, (7) उत्तरभाद्र (8) रेवती हो तो विवाह से कुण्डली मिलान में शुभ है। शेष ग्यारह नक्षत्र मध्यम होते हैं।

अपवाद नियम 7 (जब चारों पद एक राशि में है)

जब लड़के–लड़की दोनों का एक ही नक्षत्र हो तो (क) लड़के का नक्षत्र पद लड़की के नक्षत्र पद से पहले होना चाहिये। माना कि दोनों का नक्षत्र रोहिणी है तो लड़के का नक्षत्र पद रोहिणी का दूसरा पद है तो लड़की का नक्षत्र पद 3 या 4 होना चाहिये। लड़की का नक्षत्र पद एक या दो नहीं होना चाहिए। लड़के का नक्षत्र पद लड़की का नक्षत्र पद या उससे बाद में नहीं होना चाहिये।

अपवाद नियम 8 (जब एक पद एक राशि में है शेष तीन पद अन्य राशि में हों)

जब लड़के–लड़की दोनों का नक्षत्र एक हो तो दोनों का पद एक नहीं होना चाहिये।

अपवाद नियम 9 (जब तीन पद एक राशि में है शेष एक पद अन्य राशि में हो)

कुछ नक्षत्र दो राशियों में विभाजित हो जाते हैं। जैसे कृत्तिका नक्षत्र का प्रथम पद मेष राशि में है परन्तु 2, 3, 4 पद वृष राशि में है। इस प्रकार अन्य नक्षत्र भी दो राशियों में विभाजित हो जाते हैं। जैसे पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वभाद्र के तीन पद एक राशि में व अगला एक पद अगली राशि में होता है। इस प्रकार कृत्तिका, उत्तर फाल्गुनी व उत्तराषाढ़ का एक पद, एक राशि व तीन पद अगली राशि में होते हैं। सूर्य तथा बृहस्पति के नक्षत्र इसी प्रकार विभाजित है।

ऐसी स्थिति में लड़के की राशि वह होनी चाहिये। जिसमें तीन पद होते हैं । इस प्रकार

1. **कृत्तिका नक्षत्रः** कन्या, मेष राशि, लड़का वृष राशि का होना चाहिये।

2. **उत्तरफाल्गुनी नक्षत्रः** कन्या सिंह राशि, लड़का कन्या राशि।

3. **उत्तराषाढ़ नक्षत्रः कन्या** धनु राशि, लड़का कन्या राशि।

4. **पुनर्वसु नक्षत्रः** लड़का मिथुन राशि, कन्या कर्क राशि।

5. **विशाखा नक्षत्रः** लड़का तुला राशि, कन्या वृश्चिक राशि।

6. **पूर्वभद्र नक्षत्रः** लड़का कुम्भ राशि, कन्या मीन राशि की होनी चाहिए।

अपवाद नियम 10 (जब दो पद एक राशि में है)

कई नक्षत्रों के दो पद एक राशि में व शेष दो पद अगली राशि में होते हैं। जैसे मंगल के नक्षत्र मृगशिरा, चित्रा तथा धनिष्ठा। ऐसी दशा में लड़के की राशि पहली होनी चाहिए तथा लड़की की राशि पिछली राशि होनी चाहिये। जैसे **मृगशिरा नक्षत्रः** लड़का, वृष राशि, लड़की, मिथुन राशि, **चित्रा नक्षत्रः** लड़का कन्या राशि, लड़की तुला राशि, **धनिष्ठा नक्षत्रः** लड़का मकर राशि, लड़की कुम्भ राशि की होनी चाहिए।

अपवाद नियम 11

यह एक नियम है कि यदि दोनों की राशि अलग–अलग है, परन्तु लड़के का नक्षत्र लड़की के नक्षत्र से 27 वां नक्षत्र नहीं होना चाहिये। किन्तु रेवती नक्षत्र को अपवाद में लिया जाता है जो अश्विनी नक्षत्र का 27वां नक्षत्र है। मानों लड़की का नक्षत्र अश्विनी है तो लड़के का नक्षत्र रेवती 27वां नक्षत्र हो सकता है।

परन्तु दूसरे नक्षत्रों के 27वां नक्षत्र के लिये निम्न अपवाद है।

यदि दोनों की राशि एक हो तो 27वां नक्षत्र का मिलान किया जा सकता है जैसे लड़की का जन्म नक्षत्र भरणी है तथा लड़के का जन्म नक्षत्र अश्विनी 27वां है। दोनों का मिलान ठीक है क्योंकि दोनों की राशि एक है। इसके बावजूद निम्न नक्षत्रों का मिलान नहीं होता।

क. लड़का भरणी लड़की कृत्तिका

ख. लड़का पुष्य लड़की अश्लेषा

ग. लड़का धनिष्ठा लड़की शतभिषा।

यद्यपि इनकी राशि एक है फिर भी कुण्डली मिलान नहीं किया जाता।

अपवाद नियम 12

कुछ विशेष नक्षत्रों के लिये शास्त्रों में कुछ विशेष नियम बताए गए हैं:

यदि लड़की का जन्म नक्षत्र।

(i) मूल में हो तो लड़की की श्वसुर के लिए शुभ नहीं है।

(ii) अश्लेषा है तो सास के लिए शुभ नहीं है।

(iii) ज्येष्ठा नक्षत्र, लड़के के बड़े भाई के लिए शुभ नहीं है।

(iv) विशाखा नक्षत्र लड़के के छोटे भाई के लिए शुभ नहीं है।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार मूल नक्षत्र का प्रथम पद अशुभ है, शेष 2, 3, 4 पद शुभ है।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार मूल नक्षत्र का प्रथम पद श्वसुर के लिये, द्वितीय पद सास के लिये, तीसरा पद धन के लिये अशुभ होता है। परन्तु चतुर्थ पद शुभ होता है। परन्तु यह निश्चित है कि मूल नक्षत्र वाली कन्या यदि प्रथम चरण/पद में हो तो लड़के के पिता के लिये शुभ नहीं होती।

अश्लेषा नक्षत्र–जिस लड़की का जन्म नक्षत्र अश्लेषा का प्रथम पद है, वह लड़के की माता के लिये शुभ नहीं होती।

विशाखा नक्षत्र–जिस लड़की का जन्म नक्षत्र विशाखा का चतुर्थ पद है, वह लड़के के छोटे भाई के लिये शुभ नहीं है।

ज्येष्ठा नक्षत्र–जिस लड़की का जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा होता है, वह लड़के के बड़े भाई के लिए शुभ नहीं होती।

इस प्रकार हम पाते हैं कि यह दोष केवल लड़की पर ही प्रयोग किये जाते हैं। लड़के के जन्म नक्षत्र पर नहीं। परन्तु कुछ विद्वान दोनों पर ही प्रयोग करते हैं। परन्तु मृत्यु का सम्बन्ध लड़की के (पुत्र वधु) साथ नहीं होता। यदि लड़के के पिता की मृत्यु होनी है तो उसकी कुण्डली के योगों, मारक ग्रहों व दशान्तर दशा तथा गोचर के फल के कारण होती है। पुत्र वधु के जन्म नक्षत्र के कारण नहीं। लड़की या लड़के के जन्म नक्षत्र को दोष देना सर्वथा अनुचित है।

यह जो कुटुम्ब है वह एक नाव में सवार सवारियों की तरह है। नाव में जो कुछ घटना होगी, नाव डूबेगी, या झटके खाएगी, लहरों में डगमगाएगी, सब सवारियां उसे अनुभव करेंगी। यदि पिता को मरना है तो माता के भाग्य में भी उस समय वैधव्य योग दशान्तर दशा में चल रहा होगा। लड़के की कुंडली में भी पिता की मृत्यु योग दशान्तर दशा में चल रहा होगा। इस प्रकार परिवार के अन्य सदस्यों में भी अनिष्ट योग चल रहे होंगे। केवल दूसरे परिवार से आई कन्या पर दोष मड़ना उचित नहीं है। हां, लड़की की भी ऐसी दशान्तरदशा चल रही होगी कि ऐसी नाव में सवार हुई जहां अनिष्ट होना था।

एक तारा नक्षत्र के मिलान में जो कमी है वह यह है कि एक नक्षत्र होने के कारण उनकी नाड़ी भी एक होगी जो स्वास्थ्य की ओर इंगित करती है। अर्थात् एक नक्षत्र वाले लड़के–लड़की का स्वास्थ्य ठीक न रहने की संभावना बढ़ जाती है।

संक्षिप्त में तारा कूट

1. दक्षिण भारत में लड़की के जन्म नक्षत्र से केवल नक्षत्र संख्या गिनी जाती है। उत्तर भारत में दोनों

से गिनी जाती है।

2. 3, 5, 7 तारा को जन्म पर्याय में होने पर मिलान नहीं करना चाहिये।

3. प्रथम पद तीसरी तारा, चतुर्थ पद पांचवी तारा तथा तृतीय पद सातवीं तारा का अनुजन्म पर्याय में मिलान नहीं करना चाहिये। पर्याय को उत्तर भारत में प्रथा नहीं है।

4. त्री जन्म पर्याय में तारा दोष नहीं होता परन्तु उत्तर भारत में 3, 5, 7 तारा को अशुभ मानते हैं।

5. हस्त, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्र में 3, 5 तारा का दोष नहीं मानते।

6. मृगशिरा, मघा, स्वाती तथा अनुराधा में तारा दोष नहीं मानते।

7. वध तारा, 7वीं तारा का दोष कुछ विशेष नक्षत्रों (देखें तारा दोष तालिका) के नहीं मानते।

8. 12 अपवाद नियमों को ध्यान में रखना चाहिये।

9. दोनों का नक्षत्र एक होने के कारण लड़के लड़की के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा। इसलिये लग्न व लग्नेश का बलवान होना आवश्यक होता है।

जो मनुष्य उसी तरह आचरण करता है जिस तरह कि उसे करना चाहिए तो वह मनुष्यों में देवता समझा जाएगा।

सदाचार और धर्म का विवाहित जीवन से विशेष सम्बन्ध है और सुयश उसका आभूषण है।

(तिरूक्कुरल)

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. दक्षिण भारत व उत्तर भारत की तारा में क्या अन्तर है?

2. कौन सी तारा अशुभ होती है?

3. तारा मिलान क्यों आवश्यक है?

4. यदि दोनों का नक्षत्र तक हो तो क्या सावधानियां होनी चाहिये?

5. यदि दोनों का नक्षत्र एक हो तो जातक में किस कूट/गुण की कभी हो जाती है?

अवकहडा चक्र

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृगशिरा				आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य				अश्लेषा			
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4
अक्षर	चू	चे	लो	ला	ली	लू	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो	क	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
राशि	मेष									वृष									मिथुन									कर्क								

नक्षत्र	मघा				पू.फा.				उ.फा.				हस्त				चित्रा				स्वाती				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पु	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री	रु	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
राशि	सिंह									कन्या									तुला									वृश्चिक								

नक्षत्र	मूल				पू.आ.				उ.आ.				श्रवण				धनिष्ठा				शतभिषा				पू.भा.				उ.भा.				रेवती			
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4	1	2	3	4
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	ध	फ	ढ़	भे	भो	ज.	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची
राशि	धनु									मकर									कुम्भ									मीन								

अध्याय–6

योनि कूट विचार

अधिकतम अंक 4

योनी जातक की मानसिक अभिरुचि, स्वभाव को दर्शाता है। इसमें जातक का दूसरों के प्रति सोच, व्यवहार व व्यक्तित्व का पता चलता है। इसलिये कई विद्वान, साझेदारी, मालिक, नौकर का भी विचार योनी से करते हैं।

योनियां 14 प्रकार की होती हैं। प्रत्येक नक्षत्र को अलग योनि दी गई है। इसमें अभिजित नक्षत्र को भी नक्षत्रों में दिया गया है। इस प्रकार 28 नक्षत्रों को अलग–अलग योनि दी गई है। योनियों के नाम हैं: (1) अश्व, (2) गज (3) मेष (4) सर्प (5) श्वान (6) मार्जार (7) मूषक (8) गौ (9) महिष (10) व्याघ्र (11) मृग (12) वानर (13) नकुल (14) सिंह।

जातक के जन्म नक्षत्र के आधार पर योगिनी का निर्धाण किया जाता है। जो योनि बोधक तालिका में देखा जा सकता है। प्राचीन समय में मनुष्य प्रकृति के साभिध्य में रहता था। इसलिए उसे पशु पक्षियों के स्वभाव का ज्ञान था। तब वह स्वाभाविक हो जाता है कि उसने मनुष्यों में भी जानवरों के स्वभाव को देखा और उनके स्वभाव को पशुओं के स्वभाव से इंगित किया। उनकी शत्रुता का पशुओं की शत्रुता से दर्शाया। यदि लड़के–लड़की की योनि एक है तो एक दूसरे के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है। इसलिए उसको 4 अंक दिये। यदि दोनों में मैत्री है तो 3 अंक, यदि दोनों सम है तो 2 अंक यदि सामान्य वैर है तो 1 अंक, यदि शत्रुता है तो शून्य अंक दिया जाता है।

योनि बोधक चक्र तालिका

नक्षत्र	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुनः
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	विडाल
नक्षत्र	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
योनि	मेष	विडाल	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र
नक्षत्र	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.
योनि	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल
नक्षत्र	अभि.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
योनि	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज

शत्रु योनि बोधक तालिका

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार (विडाल)	मूषक
शत्रुयोनि	महिष	सिंह	वानर	नकुल	मृग	मूषक	मार्जार
योनि	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
शत्रुयोनि	व्याघ्र	अश्व	गौ	श्वान	मेष	सर्प	गज

वर की योनि

कन्या की योनि

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	2	3	2	2	2	1	0	1	3	3	2	1
गज	2	4	3	3	2	2	2	2	3	1	2	3	2	0
मेष	2	3	4	2	1	2	1	3	3	1	2	0	3	1
सर्प	3	3	2	4	2	1	1	1	1	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	1	2	4	2	1	2	2	1	0	2	1	1
मार्जार	2	2	2	1	2	4	0	2	2	1	3	3	2	1
मूषक	2	2	1	1	1	0	4	2	2	2	2	2	1	2
गौ	1	2	3	1	2	2	2	4	3	0	3	2	2	1
महिष	0	3	3	1	2	2	2	3	4	1	2	2	2	1
व्याघ्र	1	1	1	2	1	1	2	1	1	4	1	1	2	1
मृग	3	2	2	2	0	3	2	3	2	1	4	2	2	1
वानर	3	3	0	2	2	3	2	2	2	1	2	4	3	2
नकुल	2	2	3	0	1	2	1	2	2	2	2	3	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	2	2	4

जो पशु साथ–साथ रहते हैं। एक प्रकार का खाना खाते हैं वे मित्र हैं। जो पशु साथ–साथ रहते हैं परन्तु एक दूसरे से कोई संबंध नहीं, वे सम हैं। परन्तु जो एक दूसरे को देखकर आक्रमण कर देते हैं वे शत्रु योनि में रखे गये हैं। इसलिए जो योनियां एक दूसरे की शत्रु हैं वे विवाह के लिए त्याज्य हैं। उन्हें शून्य अंक दिया गया है।

कई विद्वान योनि का अर्थ योनि लिंग से लेते हैं। जो सर्वथा अनुचित है। यदि काम इच्छा अर्थ लिया जाए तो मित्र का अर्थ समाप्त हो जाएगा। **योनि स्वभाव को ही दर्शाती है।**

उदाहरण कुण्डली में वर का जन्म नक्षत्र उत्तर फाल्गुनी है तथा लड़की का जन्म नक्षत्र रोहिणी है। उत्तर फाल्गुनी की योनि गौ है तथा रोहिणी की योनि सर्प है। वर तथा कन्या की योनि का मिलान योनि मिलान तालिका में देखा तो उनको मिलान अंक 1 प्राप्त है जो बहुत कम है। इस प्रकार दोनों के विचारों में व्यक्तित्व में अधिक भिन्नता है। वैवाहिक जीवन में आजकल के संदर्भ में विचारों की समानता अधिक महत्व रखती है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. योनी से क्या तात्पर्य है?
2. योनी मिलान कैसे करते हैं?
3. योनी से हम और क्या–क्या मिलान कर सकते हैं?

अध्याय–7

ग्रह मैत्री विचार

अधिकतम अंक 5

योनि कूट में जातक का स्वभाव नक्षत्रों के अनुसार देखा जाता है। जातक के स्वभाव से ही घर में शान्ति या कलह रहता है। इसलिए हमारे ऋषियों ने चंद्रमा से ही इसको जानना चाहा। इसलिए ग्रह मैत्री का भी सम्बन्ध जातक के स्वभाव से है। जन्म के समय, चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है, वह राशि तथा उसका स्वामी ग्रह ये दोनों जातक के सहज स्वभाव के द्योतक होते हैं। चंद्रमा मन का प्रतिनिधि ग्रह है। चंद्रमा जन्म कुंडली में जिस राशि में स्थित रहता है जातक की मनोवृति तथा स्वभाव भी उस राशि के समान होता है। राशियां सम व विषम होती हैं।सम राशियां सौम्य तथा विषम राशियां क्रूर होती हैं। राशियों का स्वभाव अपने स्वामी के अनुसार भी होता है। जैसे मेष राशि, मंगल के प्रभाव को भी लिए रहती है। इसलिए विषम होने के कारण साहसी भी होता है। इसलिए ऐसा जातक क्रूर व साहसी होता है।

दो अनजान व्यक्तियों में शत्रुता रहेगी या मित्रता? इसकी जानकारी ज्योतिष शास्त्र में उन व्यक्तियों की जन्म कुंडली में जिस राशि में चंद्रमा स्थित रहता है उन राशियों के स्वामियों की मित्रता है या शत्रुता से जानी जाती है।

यही कारण है कि वर–वधू की कुंडली मिलान में ग्रह मैत्री को महत्व दिया जाता है। यदि वर–कन्या के राशियों की मित्रता है तो गण दोष, भकूट दोष एवं अन्य छोटे–मोटे दोष अपना महत्व खो देते हैं। गण दोष तथा भकूट दोष का परिहार ग्रह मैत्री है। इसलिए आचार्यों ने ग्रह मैत्री/राशियों के स्वामियों की मित्रता को सर्वाधिक महत्व दिया है।

नैसर्गिक ग्रह मैत्री बोधक तालिका

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि	X	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल

(इस चक्र में सूर्य आदि 7 ग्रहों के मित्र आदि का उल्लेख किया गया है। क्योंकि यही ग्रह राशियों के स्वामी होते हैं। राहु केतु के मित्र आदि जानकारी के लिए अन्य ग्रन्थ देखें।)

ग्रह मैत्री का विचार करने के लिए सर्व प्रथम वर एवं कन्या की राशि तथा उसके स्वामियों को जान लेना चाहिये। इस प्रकार राशियों को जान लेने के बाद यह जानना चाहिये कि वे आपस में मित्र, शत्रु या सम हैं। इसके लिए ग्रह मैत्री बोधक तालिका देखी जा सकती है।

ग्रहों के नैसर्गिक रूप में 3 प्रकार के सम्बन्ध होते हैं। कुछ ग्रह एक दूसरे के मित्र होते हैं। कुछ शत्रु होते हैं तथा अन्य सम होते हैं। (न शत्रु न मित्र) यह ग्रह मैत्री तालिका से जाना जा सकता है।

इस प्रकार वर–कन्या की राशियों के स्वामियों का परस्पर सम्बन्ध निम्न प्रकार से बनता है। 1. परस्पर मित्र 2. एक सम दूसरा मित्र 3. एक मित्र दूसरा शत्रु 4. परस्पर सम 5. एक सम दूसरा शत्रु 6. परस्पर शत्रु 7. दोनों एक ही स्वामी इनको निम्न प्रकार से अंक दिये जाते हैं।

ग्रह मैत्री का गुणांक बोधक चक्र

सम्बन्ध	गुणांक
1. एक परस्पर मित्र	5
2. एक सम दूसरा मित्र	4
3. एक मित्र दूसरा शत्रु	1
4. परस्पर सम	3
5. एक सम दूसरा शत्रु	0.5
6. परस्पर शत्रु	0
7. दोनों का एकाधिपति	5

ग्रह मैत्री के कुल अंक 5 होते हैं। जब वर तथा कन्या का राशीश एक ही ग्रह होता है या परस्पर मित्र होता है, तो दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। यदि दोनों के राशीश एक दूसरे के शत्रु होते हैं तो झगड़े, विवाद या विचारों में मतभेद होता है। अतः इस स्थिति में विवाह नहीं करना चाहिये। इसलिए आचार्यों ने शून्य अंक दिया है। अन्य अंक निम्न तालिका से देखे जा सकते हैं।

नैसर्गिक ग्रह मैत्री गुण मिलापन तालिका

	वर							
	ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कन्या	सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
	चन्द्र	5	5	4	1	4	0.5	0.5
	मंगल	5	4	5	0.5	5	3	0.5
	बुध	4	1	0.5	5	0.5	5	4
	गुरु	5	4	5	0.5	5	0.5	3
	शुक्र	0	0.5	3	5	0.5	5	5
	शनि	0	0.5	0.5	4	3	5	5

आज के बदले हुए वातावरण को देश, काल व पात्र का ध्यान रखते हुए नैसर्गिक **ग्रह मैत्री मिलान व योनि मिलान का महत्व अधिक हो गया है।** लड़का–लड़की दोनों का व्यवहार स्वतंत्र हैं, शिक्षित हैं व वित्त में भी आत्मनिर्भर है। इसलिए दोनों का स्वभाव तथा व्यक्तित्व का सामंजस्य अत्यन्त आवश्यक हो गया है। अन्यथा लड़ाई–झगड़ा, विवाद एवम् तलाक हो जाता है।

उदाहरण कुंडली में लड़के का राशीश सूर्य है तथा लड़की का राशीश शुक्र है। दोनों परस्पर शत्रु हैं। इसलिए ग्रह मैत्री मिलान अंक शून्य है।

नोट–1. कुछ विद्वान ज्योतिषी बृहस्पति को चंद्रमा का मित्र ग्रह मानते हैं। सम नहीं जैसा कि तालिका में दिया गया है। इसी प्रकार

2. शुक्र को मंगल का मित्र ग्रह मानते हैं।

3. सब ग्रह बुध के मित्र हैं केवल चंद्रमा शत्रु है।

4. शनि को बृहस्पति का मित्र मानते हैं।

5. सूर्य व मंगल शनि के सम ग्रह हैं, चन्द्रमा भी शत्रु ग्रह है।

6. यदि जन्म कुंडली में राशीशों की परस्पर मैत्री नहीं है, परन्तु चंद्रमा में नवांशेश (नवांशकुंडली में) राशि स्वामी जिनमें चंद्रमा स्थित है ग्रहों में मित्रता है तब भी ग्रह मैत्री ठीक मानी जाती है।

गर्ग संहिता के अनुसार सूर्य व चंद्र को छोड़कर शेष ग्रहों की दो राशियां हैं। दो राशियों में से किसी एक राशि में ग्रह उच्च का होता है तो उस ग्रह के लिये दूसरी राशि भी मित्र की राशि होती है। जैसे सूर्य मेष राशि में उच्च का होता है जिसका स्वामी मंगल है। तो सूर्य के लिए मंगल की दूसरी राशि वृश्चिक भी मित्र की राशि है। इसी प्रकार चंद्रमा वृष में उच्च का होता है तो शुक्र की दूसरी राशि तुला भी मित्र राशि है।

शुक्र मीन राशि में उच्च का होता है। इसलिए बृहस्पति की दूसरी राशि धनु भी शुक्र के लिए मित्र राशि है। इसलिए ग्रहों की मैत्री व शत्रुता का विचार आवश्यक हो जाता है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. ग्रह मैत्री क्या दर्शाती है?

2. ग्रह मैत्री कैसे देखी जाती है?

3. ग्रह मैत्री का क्या महत्व है?

4. ग्रह मैत्री को कितने अंक दिये गये हैं?

5. ग्रह मैत्री नहीं मिले तो वर–वधू में किस गुण की कमी आ जाती है?

6. ''यदि ग्रह मैत्री हो तो अन्य दोषों में कमी आ जाती है'' की व्याख्या कीजिए?

अध्याय–8

गण विचार

अधिकतम अंक 6

आचार्यों ने प्रकृति के तीन प्रकार के गुणों को माना है सत्व, रजस व तमस। इन गुणों के प्रतीक रूप में मानव भी तीन प्रकार के होते हैं। 1. देव, 2. मनुष्य, 3. राक्षस।

आचार्यों ने 27 नक्षत्रों को भी इन तीन गुणों में विभाजित किया है। जन्म नक्षत्र के आधार पर जातक का गण जाना जा सकता है।

गण बोधक चक्र

गण	जन्म नक्षत्र
देव	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वाती, अनु., श्रव.,रेव.
मनुष्य	भर., रोहि., आर्द्रा, पू.फा., उ.फा., उ.आ.,पू.आ. पू.भा.,उ.भा.
राक्षस	कृत्ति., आश्ले., मघा, चित्रा, विशा., ज्येष्ठा, मूल., धनि.,शत.

मिलान नियम

1. यदि लड़के व लड़की का एक ही गण हो तो मिलान अति शुभ होता है। उसको 6 अंक मिलते हैं।

2. यदि लड़का देव गण तथा लड़की मनुष्य गण के हों या लड़का मनुष्य गण व लड़की देव गण के हो तो मिलान शुभ होता है तथा अंक 5 दिये जाते हैं।

3. यदि लड़की देव गण की है तथा लड़का राक्षस गण है तो वह अशुभ है।

4. यदि लड़की राक्षस गण की है तथा लड़का मनुष्य गण का हो तो यह मिलान मृत्युदायक है। या इसके विपरीत लड़का राक्षस गण तथा लड़की मनुष्य गण की हो तो भी यह कुण्डली मिलान मृत्युदायक होता है।

अपवाद/परिहार

1. यदि लड़के के जन्म नक्षत्र से गिनने पर लड़की का नक्षत्र 14 या 14 नक्षत्र से दूर पड़ता है तो गण दोष समाप्त हो जाता है।

2. यदि लड़की तथा लड़के का राशि स्वामी एक ही ग्रह हो या मित्र ग्रह हो या सम सप्तक हो तो गण दोष समाप्त हो जाता है।

3. यदि राक्षस गण वाले जातक की जन्म कुंडली में पक्ष बली चन्द्रमा लग्न या सप्तम भाव में हो तो राक्षस गण दोष समाप्त हो जाता है।

4. यदि लड़की या लड़के की जन्म कुंडली में अधियोग हो तो गण दोष समाप्त हो जाता है।

उदाहरण कुंडली में लड़का का जन्म नक्षत्र उत्तरफाल्गुनी तथा लड़की का जन्म नक्षत्र रोहिणी है। लड़का मनुष्य गण है व लड़की भी मनुष्य गण की है। इसलिये मिलान अति उत्तम है।

गण गुण बोधक तालिका

	वर के गण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या के गण	देव	6	5	1
	मनुष्य	6	6	0
	राक्षस	1	0	6

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. गण कूट के अधिकतम अंक कितने हैं?
2. गण कूट का मिलान कैसे किया जाता है?
3. गण कूट कब अशुभ होता है?
4. गण कूट कब शुभ होता है?
5. गण दोष का क्या परिहार होता है?

अध्याय–9

भकूट विचार

अधिकतम अंक 7

इसमें वर–राशि से कन्या–राशि तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों पर राशि स्थिति से फल ज्ञात किया जाता है। भकूट का तात्पर्य है कि लड़की तथा लड़के की राशियां–जिसमें चन्द्रमा स्थित है–एक दूसरे से कितनी अन्तर पर है, को देखा जाता है।

1. सम सप्तम–प्रथम सप्तम

2. द्वितीय–द्वादश

3. तृतीय–एकादश

4. चतुर्थ–दशम

5. पंचम–नवम

6. षष्ठ–अष्टम

राशि एक हो, त्रि+एकादश हो, चतुर्थ–दशम हो तो भकूट मिलान उत्तम होता है। इसको हम सात अंक देते हैं।

यदि चंद्र राशि एक दूसरे से द्वि–द्वादश, षड–अष्टम, नवम–पंचम हो तो भकूट मिलान अशुभ होता है। इसको हम शून्य अंक गुण मानते हैं। यह भकूट बोधक तालिका से देखा जा सकता है।

भकूट बोधक तालिका

वर की भकूट

कन्या की भकूट

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुंभ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

वर कन्या की एक ही राशि होने पर विवाह अत्यन्त शुभ होता है और यह सद् भकूट सभी दोषों का शामक है। परन्तु राशि एक होने पर भी पूर्ण नक्षत्र एक होना त्याज्य है। (देखिए तारा–मिलान अध्याय)

यदि लड़की की जन्मराशि से लड़के की जन्म राशि

एक है तो उत्तम

द्वितीय है तो मृत्यु

तृतीय है तो दुःख व कष्ट

चतुर्थ है तो गरीबी/निर्धनता

पंचम है तो वैधव्य

षष्ठ है तो बच्चों की मृत्यु

सप्तम है तो सुख व दीर्घायु

अष्टम है तो बहुत बच्चे

नवम है तो दीर्घायु

दशम है तो धन प्राप्ति

एकादश है तो सुख

द्वादश है तो दीर्घायु

नियम–

1. भकूट मिलान उत्तम होता है, यदि लड़के की राशि लड़की की राशि से सप्तम है या सप्तम राशि से आगे है सप्तम से कम नहीं होनी चाहिए। जैसे लड़की की राशि मेष है लड़के की राशि तुला यह उत्तम भकूट है। या लड़के की राशि धनु है अर्थात् सप्तम राशि से आगे है तब भी उत्तम है।

यदि लड़की की राशि मेष है तथा लड़के की राशि कन्या है तो यह अशुभ है क्योंकि सप्तम राशि से कम है।

2. द्वि द्वादश भकूट दोषः यदि लड़के की जन्म राशि लड़की की जन्म राशि से द्वितीय है तो यह 2/12 स्थिति है, कुण्डली मिलान में अशुभ भकूट है। निर्धनता कारक होता है।

परिहार/अपवादः यदि लड़के की राशि सम है तथा लड़की की राशि विषम है तो द्विर्द्वादश भकूट समाप्त हो जाता है जैसे लड़के की राशि वृष है तथा लड़की की राशि मिथुन है तो दोनों की राशियां 2/12 द्विर्द्वादश हुई। परन्तु लड़के की राशि सम है तथा लड़की राशि विषम है। इसलिए भकूट दोष समाप्त हो गया।

मीन–मेष, वृष–मिथुन, कर्क–सिंह, कन्या–तुला, वृश्चिक–धनु, और मकर–कुम्भ शुभफल देने वाली है। परन्तु मेष–मीन, मिथुन–वृष आदि अशुभ है।

3. पंचम नवम भकूट दोषः यदि लड़के की जन्म राशि लड़की की जन्म राशि से पंचम है तो दोनों राशियां 5/9 स्थिति बनती है जो वैधव्य पैदा करती है। इसलिए अशुभ भकूट है।

परिहार/अपवाद

वर की राशि से कन्या की राशि पांचवी तथा मित्र राशियां हों तो परिहार होता है।

क. यदि लड़के की राशि मेष है तो उसकी कुण्डली सिंह राशि वाले लड़की से मिलाई जा सकती है। यद्यपि स्थिति 5/9 है।

ख. यदि लड़के की राशि कर्क हो तथा लड़की की राशि वृश्चिक से मिलाई जा सकती है। यद्यपि स्थिति 5/9 है। यह मिलान केवल इन दो राशियों के लिए है।

(ग) मीन–कर्क, वृश्चिक–कर्क, कुम्भ–मिथुन और मकर–कन्या ये चार नव पंचम विशेषतया त्याज्य है।

(घ) मेष–सिंह, वृष–कन्या, मिथुन–तुला, कर्क–वृश्चिक, सिंह–धनु, तुला–कुम्भ वृश्चिक–मीन, धनु–मेष तथा मकर–वृष आदि मित्र नव पंचम ग्राह्य है।

(ङ) यदि चंद्र राश्याधिपति तथा चंद्र नवांशेष आपस में मित्र हो तो ग्राह्य है।

षष्ठ–अष्टम भकूट दोषः यदि लड़की की जन्म राशि से लड़के की जन्म राशि षष्ठ हो तो यह स्थिति 6/8 होती है। जैसे लड़की की जन्म राशि मेष हो तथा लड़के की जन्म राशि कन्या हो तो 6/8 स्थिति बनती है। जो अशुभ भकूट है। मरणप्रद है।

परिहार/अपवाद

(क) मित्र राशीश जैसे–मेष–वृश्चिक, वृष–तुला, मिथुन–मकर, कर्क–धनु, सिंह–मीन, कन्या–कुम्भ आदि मित्र राशियां का षडाष्टक ग्राह्य है। शत्रु षडाष्टक गाह्य नहीं है।

(ख) यदि लड़की की जन्म राशि विषम हो व लड़के की षष्ठ सम राशि का मिलान हो सकता है। जैसे लड़की की जन्म राशि यदि मेष हो तो लड़के की जन्म राशि कन्या हो सकती है। यद्यपि वह 6 राशि है। क्योंकि कन्या सम राशि है। अतः मिलान सही है।

(ग) शुभ तारा भी ग्राह्य है।

द्विर्द्वादश, नवम–पंचम एवं षष्ठाष्टम ये तीन भकूट अशुभ माने गये हैं तथा त्याज्य हैं। किंतु वर–कन्या दोनों की राशियों का स्वामी एक ही ग्रह हो तो भकूट दोष समाप्त हो जाता है। यहां हमारे तीन प्रकार के सम्बन्ध बनते हैं।

1. यदि दोनों की राशि का स्वामी एक ही ग्रह हो।

2. यदि दोनों की राशि के स्वामी मित्र हों।

3. यदि दोनों की राशि के स्वामी सम सप्तम हो जैसे लड़की की राशि वृष है तथा लड़के की राशि तुला है तथा दोनों राशियों का स्वामी शुक्र है व एक दूसरे से 6/8 भी है। परन्तु दोनों की कुंडली का मिलान शुभ है।

इसी प्रकार लड़की की जन्म राशि कर्क है तथा लड़के की जन्म राशि धनु है। दोनों राशियां परस्पर 6/8 हैं। परन्तु कर्क राशि का स्वामी चन्द्र तथा धनु राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर मित्र हैं। 6/8 भकूट दोष समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार लड़की कन्या राशि, लड़का कुम्भ राशि, लड़की मेष राशि लड़का वृश्चिक, लड़की मकर राशि लड़का मिथुन राशि, लड़की मीन राशि लड़का सिंह राशि का हो तो 6/8 भकूट दोष समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार यदि सप्तमेश, सप्तम भाव, पंचमेश पंचम भाव तथा बृहस्पति, शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तथा शुभ दृष्टि हो तो कन्या माता–पिता तथा ससुराल वालों के लिए सुखदायक होती है।

षडाष्टक भकूट दोष एक महादोष है। क्योंकि छठा स्थान शत्रुता का तथा आठवां स्थान मृत्यु का होता है। यदि लड़का लड़की की राशियां आपस में षष्ठ व अष्टम हों तो इन दोनों में शत्रुता, विवाद, झगड़े, कलह होते रहते हैं। आत्महत्या, हत्या आदि के मामले सर्वाधिक षष्ठात्मक में देखे गये हैं। इसलिये षष्ठाष्टक दोष महादोष माना गया है। मेलापक में यह दोष त्याज्य है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. भकूट कूट कैसे मिलाते हैं?
2. भकूट कूट के अधिकतम अंक कितने हैं?
3. भकूट कूट कब शुभ होता है?
4. भकूट कूट कब अशुभ होता है?
5. यदि वर–वधू की राशियां 2/12 हैं तो इसका क्या परिहार है?
6. यदि वर–वधू की राशियां 5/9 है तो क्या परिहार है?
7. यदि वर–वधू की राशियां 6/8 है तो क्या परिहार है?

अध्याय–10

नाड़ी विचार

अधिकतम अंक 8

संकल्प, विकल्प तथा कूट प्रतिक्रिया करना मन के सहज कार्य है। इन तीनों को जानने के लिये ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों ने तीन नाड़ियों को माना है। 1. आदि 2. मध्य तथा 3 अन्त जैसे शरीर की बीमारी जानने के लिये वैद्यों ने वात्त पित्त एवं कफ दोष माने हैं। अलग–अलग नक्षत्रों को अलग–अलग नाड़ियों में विभक्त किया गया है।

नाड़ी बोधक तालिका

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त
जन्म नक्षत्र	अश्वि., आर्द्रा पुनर्वसु उ. फा. हस्त, ज्येष्ठा मूल, शतभिषा पूर्वभाद्र	भरणी, मृगशिरा पुष्य, पू.फा. चित्रा, अनुराधा पूर्वाषाढ़ धनिष्ठा उत्तरभाद्र	कृत्तिका, रोहिणी आश्लेषा मघा, स्वाती विशाखा उत्तराषाढ़ श्रवण रेवती

जिस प्रकार पित्त प्रधान जातक को पित्त नाड़ी चलने पर पित्त को बढ़ावा देने वाले पदार्थों का सेवन मना होता है उसी प्रकार लड़के–लड़की की एक नाडी वर्जित होती है और इसको 8 अंक दिये हैं। अर्थात् यदि लड़के–लड़की को एक नाड़ी हो तो कुंडली मिलान अशुभ है। यदि लड़के लड़की की नाडी भिन्न–भिन्न है तो कुण्डली मिलान शुभ है और 8 अंक दिये जाते हैं।

नाड़ी गुण बोधक चक्र

वर की नाड़ी

कन्या की नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त
आदि	0	8	8
मध्य	8	0	8
अन्त	8	8	0

भारत के अधिकांश प्रदेशों में नाड़ी दोष को अधिक महत्व दिया जाता है तथा नाड़ी दोष होने पर पूर्ण रूपेण उपयुक्त वर–कन्या का विवाह मना कर दिया जाता है। इस स्थिति में नाड़ी दोष के विषय पर गंभीरता पूर्वक विचार करना होगा।

नाड़ी दोष का सम्बन्ध वर–कन्या के शारीरिक तथा मानिसक स्वास्थ्य से है– मानो एक जातक विद्वान है, पढ़ा लिखा है, धनवान आदि भी है परन्तु बिस्तर पर पड़ा हुआ है तो ऐसे जातक के साथ–कौन माता पिता अपनी लड़की का विवाह करना पसंद करेगा। जीवन का आधार स्वास्थ्य है। शायद इसीलिए ही हमारे आचार्यों ने नाड़ी दोष को 8 अंक दिये हैं। गृहस्थ जीवन का आधार भी स्वास्थ्य है। यदि वर नपुंसक है तो विवाह का अर्थ ही समाप्त हो जाता है। लड़की को मासिक नहीं आता तो सन्तान का आधार ही समाप्त हो जाता है। वंश ही समाप्त हो जाता है। वैवाहिक जीवन सुखमय रहने के लिए दोनों का स्वस्थ आवश्यक हैं। नाड़ी दोष का मिलान आवश्य है। वर–कन्या का नाड़ी दोष न मिलने पर मानसिक बीमारियां भी देखी गई हैं। बच्चे मानसिक तौर पर पूर्ण विकसित नहीं हो पाते। इस प्रकार वैवाहिक जीवन कष्टमय हो जाता है।

नाड़ी दोष का परिहार/अपवाद

1. यदि वर–कन्या का एक ही नक्षत्र हो तो निश्चित रूप से उन दोनों की एक ही नाड़ी होगी। प्रथम दृष्टि से यह नाड़ी दोष प्रतीत होता है। परन्तु यदि नक्षत्र के पद अलग–अलग हैं तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है। (देखें एक नक्षत्र अन्यत्र ताराकूट अध्याय 5 में)

2. (क) यदि वर–कन्या का जन्म तो भिन्न–भिन्न नक्षत्र में हुआ है परन्तु नाड़ी एक ही होने के कारण नाड़ी दोष है। यदि दोनों की राशि एक ही हो तो राशि का स्वामी एक ही ग्रह होगा। इसलिए स्वामी एक ही होने के कारण नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है।

(ख) यदि दोनों की राशि भिन्न–भिन्न हैं परन्तु दोनों राशियों का स्वामी एक ही ग्रह है तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है।

जैसे एक का नक्षत्र उत्तराषाढ़ है तो दूसरे का नक्षत्र रेवती है। परन्तु उत्तराषाढ़ की राशि का स्वामी बृहस्पति है और रेवती नक्षत्र की राशि का स्वामी भी बृहस्पति है। राशियां धनु व मीन है। नाड़ी एक अन्त है परन्तु राशि स्वामी एक होने के कारण, नाड़ी दोष नहीं माना जाएगा।

(देखें अन्यत्र एक ग्रह भकूट दोष 6/8 का परिहार अध्याय 9)

(ग) कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, ज्येष्ठा, श्रवण, उत्तरभाद्र एवं रेवती में वर कन्या के नक्षत्र हो तो नाड़ी दोष ग्राह्य है।

(घ) यदि वर–कन्या का राशीश बुध, गुरु शुक्र में से कोई ग्रह हो तो नाड़ी दोष ग्राह्य है।

(ङ) महामृत्युंजय मंत्र का पाठ व दान आदि देने के बाद मजबूरी में नाड़ी दोष ग्राह्य है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें:

1. नाडी कूट कैसे मिलाया जाता है?
2. नाडी कूट के अधिकतम अंक कितने हैं?
3. नाडी कूट क्या दर्शाता है?
4. नाडी दोष का क्या परिहार है?

अध्याय–11

मंगल व वैवाहिक परेशानियां

हिन्दू समाज कुण्डली में मांगलिक दोष से हमेशा परेशान रहता है विशेष तौर पर कन्या की कुण्डली में। कन्या की कुण्डली में मांगलिक दोष से परेशानी के कई कारण हो सकते हैं जैसे पुनर्विवाह का बन्धन, आर्थिक तौर पर पुरुष पर निर्भरता इत्यादि। इसको हम सब अच्छी तरह से जानते हैं।

मंगल एक शक्ति, उत्साह व पराक्रम प्रदान करने वाला ग्रह है। उसके अशुभ होने पर व्यक्ति उत्साह हीन अकर्मण्य हो जाता है। ऐसे ग्रह को दोष देना न्याय संगत नहीं है। कन्या को उसके बिना मासिक धर्म नहीं होता। मासिक धर्म की गड़बड़ी के कारण सन्तान होने में कठिनाई होती है। ऐसे उपयोगी ग्रह को कैसे दोषी माने। शायद इसका कारण यह हो सकता है कि मंगल तामसिक ग्रह है। वह विशेष स्थिति के कारण जातक की काम वासना बढ़ा देता है व जातक कामुक हो जाता है। दूसरा मंगल दुर्घटना का भी प्रतीक है। मारकत्व प्राप्त होने पर मृत्यु भी दे सकता है इत्यादि। केवल मंगल ही मृत्यु नहीं दे सकता अपितु बृहस्पति को भी मारकत्व हो तो वह भी अपनी दशा भुक्ति से मृत्यु दे सकता है। इसलिए शुभाशुभ लग्न पर निर्भर करता है। मंगल ही दोषी क्यों।

विवाह सुख के लिए निम्न गुणों का होना आवश्यक है–

1. पति–पत्नी का स्वस्थ रहना।

2. दोनों में एक दूसरे के प्रति विश्वास होना, शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने का सामर्थ्य होना, दोनों के बीच एक पारिवारिक समझ होना, सहन शक्ति होना आवश्यक है।

3. दोनों में सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने का सामर्थ्य होना। जैसे घर, सवारी, कपड़े, बच्चों की शिक्षा आदि।

4. धन व समाज में सम्मान।

5. सबसे अधिक दोनों की आयु का दीर्घ होना।

हमारे आचार्यों ने सहनशीलता को सबसे ज्यादा महत्व दिया। स्त्री में तो सहनशीलता का होना परम आवश्यक है। पुरुष प्रकृति से उग्र है। यदि स्त्री उग्र हो जाए तो परिवार का चलना कठिन हो जाता है। इसीलिए शायद हमारे ऋषियों ने स्त्री के उग्र होने का विरोध किया। आजकल हमारे समाज की संरचना ऐसी हो गई है कि छोटे–छोटे परिवार पति–पत्नी व बच्चे ही परिवार में आते हैं। यदि दोनों में विशेष तौर पर स्त्री में में सहन शक्ति कम हो तो परिवार चलाना कठिन हो जाता है। यदि आयु कम हो तो शेष परिवार का जीवन कठिन हो जाता है। दोनों अवस्थाओं में बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए सुखी परिवार के लिए सहनशीलता व दीर्घ आयु परमावश्यक है। मंगल ग्रह उग्रता का प्रतीत ग्रह है।

पारिवारिक सुख के लिए निम्न योग आवश्यक हैं–

1. द्वितीयेश, सप्तमेश, बृहस्पति, चंद्रमा व शुक्र बलवान होना आवश्यक है।

2. द्वितीय भाव व सप्तम भाव में व पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होनी चाहिए व द्वितीयेश तथा सप्तमेश वर्गों में भी परम मित्र या मित्र राशि में स्थित होने चाहिए।

3. षष्ठ व अष्टम भाव या लग्न व तृतीय भाव में शुभ ग्रह स्थित होने चाहिए।

4. लग्न व सप्तम भाव में बलवान शुभ ग्रह होने चाहिए।

5. सप्तमेश चतुर्थ या दशम भाव में शुभ ग्रह की राशि व शुभ ग्रहों से दृष्ट होना चाहिए।

6. नवांश कुण्डली में सप्तम भाव शुभ ग्रह की राशि, शुभ ग्रह से युक्त या शुभ ग्रह से दृष्ट होना चाहिए।

7. चंद्रमा से पंचमेश और नवमेश ग्रह लग्न या सप्तम भाव से शुभ स्थान में स्थित होना चाहिए।

8. शुक्र व सप्तमेश का राशि स्वामी बलवान व शुभ स्थान में होना चाहिए।

9. सभी ग्रह अपने नक्षत्र के स्वामी का फल देते है। इसलिए नक्षत्र का स्वामी शुभ भाव में स्थित होना चाहिए।

10. सभी ग्रह नवांश में जिस राशि में स्थित होते हैं, उसके स्वामी के अनुसार भी फल देते है। इसलिए शुक्र व सप्तमेश को नवांशेश जन्मकुण्डली में शुभ स्थित व बलवान होना चाहिए।

इसलिए सप्तमेश व शुक्र का राशि व नवांश कुण्डली में शुभ व बलवान होना, उनके नक्षत्र के स्वामी का तथा राशीश का शुभ व बलवान होना पारिवारिक सुख के लिये आवश्यक होता है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि सप्तम भाव, सप्तमेश व कारक शुक्र, तथा चंद्रमा लग्न या उनके नक्षत्र स्वामी व नवांशेश शुभ होने व बलवान होने पर मंगल या किसी अन्य ग्रह का पारिवारिक दृष्टि से संवेदनशील स्थान पर स्थित होने पर भी अन्यथा होने की संभावना नहीं रहती। पारिवारिक दृष्टि से संवेदनशील स्थान लग्न व चंद्रमा से 12, 1, 2, 4, 7, 8 भाव है। इन भावों पर मंगल या किसी अन्य अशुभ ग्रह का स्थित होना परिवार के सुख को कम कर देता है। इसके बारे में हमारे विद्वानों ने बहुत कुछ कहा है व लिखा है उसको हम सब जानते हैं फिर भी गृह कलह के कुछ योगों को मैं दुहराना चाहूंगा।

मंगली दोष
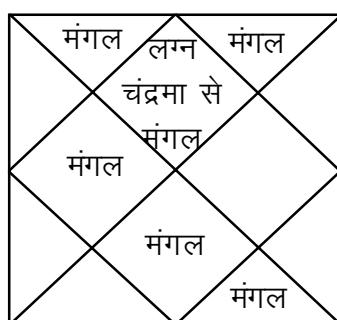
इस भावों में मंगल, शनि, राहु, केतु एवं सूर्य ये पांच ग्रह स्थित होने पर बल के अनुसार दांपत्य सुख में कमी देते हैं।

गृह कलह के कुछ योग

1. शुक्र बृहस्पति तथा सप्तमेश या द्वितीयेश निर्बल हो या पीड़ित हो।

2. सप्तम भाव अपने अंतिम नवांश में हो व उसमें अशुभ ग्रह स्थित हों।

3. अशुभ ग्रह 2, 7, 8 व लग्न में स्थित हो व अशुभ दृष्ट हो।

4. अशुभ ग्रह 6, 7, 8 भाव में कैसे भी स्थित हो। (मंगल, शनि राहु)।

5. किसी भी भाव में सिंह राशि में मंगल व शुक्र या शुक्र व राहु स्थित हो।

6. मंगल व शुक्र की युति हो व बृहस्पति उनसे केन्द्र में स्थित हो या शुक्र व बृहस्पति की युति हो व मंगल उनसे केन्द्र में स्थित हो।

7. शुक्र व गुलिका या शुक्र व मंगल लग्न 2, 4, 7, 8, 12 भाव में स्थित हो।

8. अशुभ ग्रह सप्तम भाव मध्य के निकट हो व कृष्ण पक्ष का चंद्रमा 12 वें भाव में स्थित हो।

9. शुक्र व बुध ग्रह सप्तम भाव में जन्म कुंडली या नवांश कुंडली में स्थित हो।

10. सप्तमेश द्वितीय भाव में स्थित हो व अशुभ ग्रह से दृष्ट हो।

11. लग्न या चंद्रमा से अष्टमेश जन्मकुंडली के लग्न या सप्तम भाव में स्थित होकर पीड़ित हो।

12. एकादशेश व द्वादशेश की सप्तम भाव में युति हो।

13. सप्तम भाव या अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो व उस अशुभ दृष्टि हो।

14. अष्टमेश का नक्षत्र स्वामी पति व पत्नी का एक नहीं होना चाहिए।

15. चंद्रमा, शुक्र व मंगल तीनों में से कोई दो सम सप्तम द्विस्वभाव राशि में लग्न व सप्तम भाव में नहीं होने चाहिए।

16. वक्री बृहस्पति मंगल के साथ नहीं होना चाहिए।

17. नवांश कुंडली में अष्टमेश या द्वादशेश लग्न से सप्तम भाव में स्थित नहीं होने चाहिए।

18. यदि लग्न के भाव मध्य पर कोई नीच ग्रह स्थित है और उस पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव नहीं है।

19. शुक्र यदि चर राशि में व चर नवांश में स्थित हो तो विवाह में अस्थिरता आती है। विशेष तौर पर पहले विवाह में।

20. शुक्र या सप्तमेश वक्री होकर किसी अन्य वक्री ग्रह के साथ स्थित हो।

21. स्थिर राशि लग्न में एवं बृहस्पति सप्तम भाव में स्थित हो।

22.द्विस्वभाव लग्न में एवं वक्री बृहस्पति सप्तम भाव में स्थित हो।

23. षष्ठेश की 2, 7 भाव में स्थिति या बृहस्पति या शुक्र के साथ युति या दृष्टि सम्बन्ध हो।

24. यदि चतुर्थ भाव में शुक्र व राहु की युति हो।

25. सूर्य व सप्तमेश की तृतीय भाव में युति हो।

26. सिंह या कुम्भ लग्न वालों के तृतीय भाव में सूर्य या शनि अपनी नीच राशि में स्थित हो।

27. शुक्र से चतुर्थ भाव में वक्री मंगल स्थित हो।

28. पति की कुण्डली में शुक्र धनु राशि में व पत्नी की कुंडली में शुक्र मिथुन राशि में वैवाहिक सम्बन्ध शीघ्र समाप्त करता है। इसके विपरीत स्थिति में भी यही होता है।

29. राहु या केतु के साथ शुक्र या चंद्रमा द्वादश भाव में स्थित हो।

30. देखने में आया है कि कन्या की कुण्डली में बुध अष्टम भाव में वैधव्य पैदा करता है।

इस प्रकार और भी कई योग देखे जा सकते हैं। हमारा लिखने का अर्थ यह है कि संवेदनशील भावों में मंगल की स्थिति के साथ–साथ अन्य अशुभ ग्रहों की स्थिति भी वैवाहिक सुख को कम कर सकती है। मुख्यतः सप्तम भाव, सप्तमेश व शुक्र की स्थिति को देखना अत्यन्त आवश्यक है। सप्तम भाव, सप्तमेश व शुक्र पर पड़ने वाले प्रभाव ज्यादा महत्व रखते हैं।

आज देश काल व पात्र के अनुसार अष्टकूट मिलान का महत्व कम हो गया है। आज का जातक 20 या 22 वर्ष का होने पर विवाह के योग्य होता है। वह पढ़ा लिखा समझदार होता है। वह अपनी इच्छा के अनुसार अपनी पसन्द के साथी से शादी करना चाहता है। जात, बिरादरी व अन्य धारणाओं की पकड़ कम होती जा रही है। ऐसे समय में हमारा पारिवारिक गृहस्थी जीवन सुखी कैसे हो विद्वानों को सोचना है।

हमारे मनीषियों ने समाज की अवस्था का मनन व चिन्तन कर समस्याओं का मंथन किया और उनका हल निकाला कुण्डली मिलाना। कुण्डली मिलान से गृहस्थ जीवन की सारी समस्याओं का पूर्ण हल तो नहीं निकलता, परन्तु जीवन सहने योग्य जरूर हो जाता है। पहले था कि यदि किसी जातक की कुंडली में मंगल दोष हो अर्थात गृहस्थ जीवन के संवेदनशील भावों में अशुभ ग्रह स्थित हो उसका विवाह ऐसे जातक की कुंडली के साथ करना चाहिये जिसकी कुण्डली में भी सदृश्य भावों में अशुभ ग्रह बैठे हों। अर्थात् मंगली कुंडली वाले जातक का विवाह मंगली कुंडली वाले जातक के साथ करें। कई समस्याएं हल हो जाएंगीं। इसी सदृश सिद्धांत का नियम होम्योपैथी में बीमारियों को ठीक करने के लिए किया

जाता है। विपरीत राजयोग इसी सिद्धान्त पर आधारित है। गणित में ऋणात्मक जमा ऋणात्मक घनात्मक हो जाता है। इसी सिद्धान्त पर आधारित है। इस सिद्धान्त का ज्योतिष में बहुत प्रयोग किया गया है। परन्तु यह तभी संभव है जब जातक बुद्धि से काम ले। आजकल सब जातक मन से काम लेते हैं। मनमानी करते हैं। बुद्धिमानी कहां है। इसलिए गृहस्थ जीवन अशांत है।

हमारे ऋषियों ने वैवाहिक जीवन को सुखमय करने के लिए मंगल के संवेदनशील भावों में स्थित का अध्ययन किया और पाया कि निम्न परिस्थितियों में मंगल जातक का अशुभ नहीं करता–

मंगल दोष परिहार/अपवाद
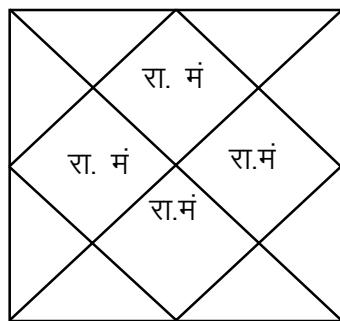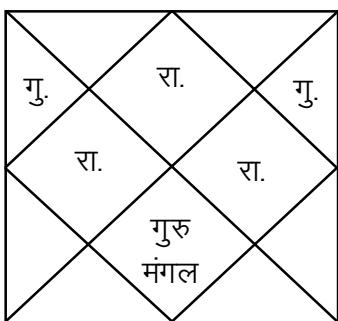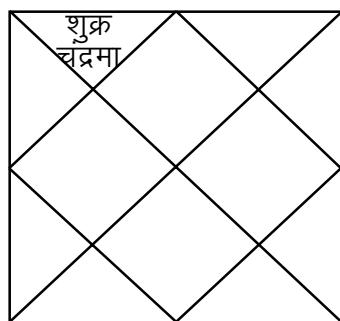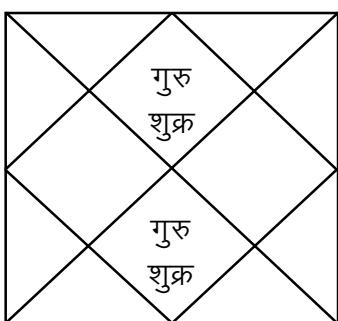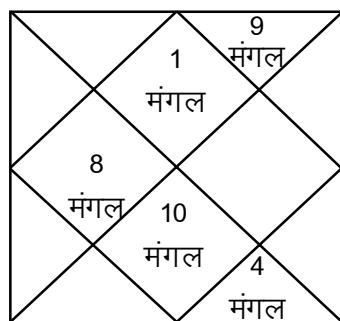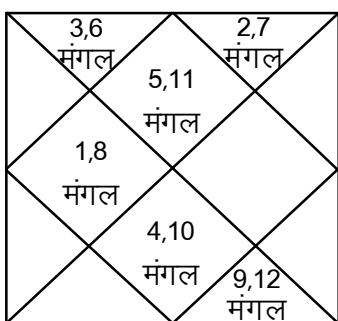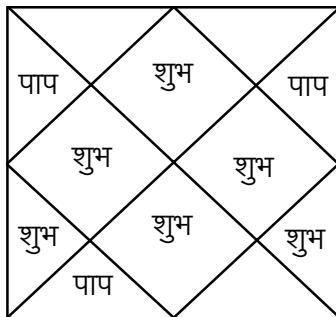
शुभ व पाप ग्रह की स्थिति मंगल दोष नष्ट करती है।

1. यदि मंगल द्वितीय भाव में बुध की राशि मिथुन या कन्या में स्थित हो।
2. यदि मंगल द्वादश भाव में शुक्र की राशि वृष या तुला में स्थित हो।
3. यदि मंगल चतुर्थ भाव में मंगल की राशि मेष वृश्चिक में स्थित हो।
4. यदि मंगल सप्तम भाव में मकर या कर्क राशि में स्थित हो।
5. यदि मंगल अष्टम भाव में बृहस्पति की राशि धनु या मीन में स्थित हो।
6. यदि मंगल लग्न में सिंह या कुम्भ राशि में स्थित हो।
7. यदि मंगल की लग्न में बृहस्पति या चंद्रमा के साथ युति हो।
8. मंगल चर राशि में स्थित हो।
9. मंगल केतु के नक्षत्र में स्थित हो।
10. यदि मंगल उच्च, नीच, अस्त या अपनी राशि में स्थित हो।
11. यदि मंगल के भाव में दूसरे (वर या वधू) की कुण्डली में शनि स्थित हो।
12. यदि बलवान बृहस्पति या शुक्र लग्न या सप्तम भाव में स्थित हो।
13. यदि कन्या की कुण्डली में मंगल दोष हो और वर की कुण्डली में उसी भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो।
14. यदि मंगल लग्न में मेष राशि या चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम भाव में मकर राशि, अष्टम भाव में कर्क राशि या द्वादश भाव में धनु राशि में स्थित हो।
15. मांगलिक दोष नहीं होता यदि शुक्र व चंद्रमा द्वितीय भाव में स्थित हो या मंगल व बृहस्पति का युति या दृष्टि सम्बन्ध हो या राहु केन्द्र में स्थित हो या राहु व मंगल की युति हो।

16. यदि चंद्रमा बली ग्रह के साथ केन्द्र में स्थित हो या मंगल व चंद्रमा की युति हो।

17. यदि शुभ ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो व अशुभ ग्रह उपचय भावों में स्थित हो (3, 6, 10, 11) ।

18. यदि वर व कन्या के चन्द्रमा की राशि स्वामियों की मित्रता हो या गण वही हो या अष्टकूट मिलान के अंकों की संख्या 30 से अधिक हो।

19. यदि मंगल वक्री, उच्च, नीच, अस्त या शत्रु या अधिशत्रु राशि में स्थित हो व उस पर किसी अशुभ ग्रह का प्रभाव न हो।

20. मंगल के प्रभाव के लिये मंगल का भाव मध्य पर होना व किसी अन्य अशुभ ग्रह का भी प्रभाव होना चाहिए।

आइए हम कुछ मांगलिक पति पत्नियों की कुण्डलियां देखें

पति 22–4–1941
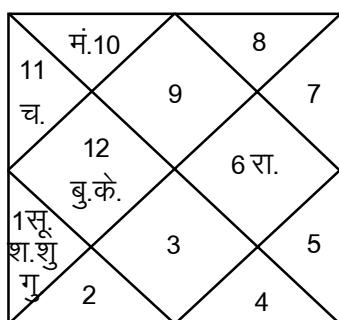
पत्नी 23–10–1947
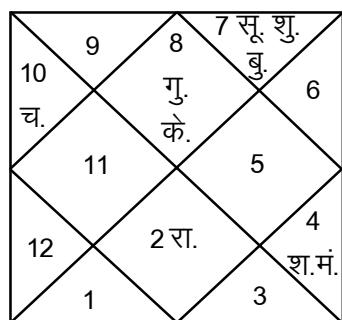
पति व पत्नी दोनों के लग्न व राशि एक दूसरे से द्वि–द्वादश है। पति मंगली है। परन्तु दोनों मित्र राशियां हैं। मंगल उच्च का होने के कारण दोनों का परिवार अब तक ठीक है। मंगल पर शनि की दृष्टि व युति ने भी मंगल का पापत्व कम किया। पत्नी की कुंडली में लग्नस्थ गुरु की शनि व मंगल की दृष्टि भी शुभता दे रही है।

पति 15–7–1965
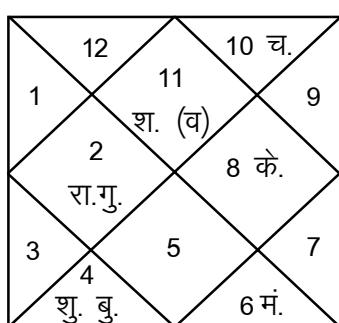
पत्नी 1–12–1971
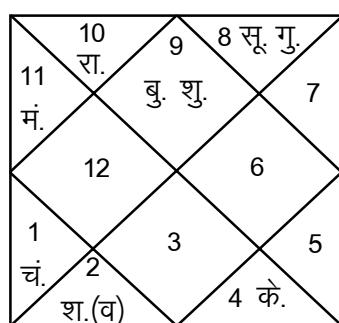
पति अष्टमस्थ मंगल के कारण मंगली है। परंतु बृहस्पति की दृष्टि है। दोनों पारिवारिक दृष्टि से सुखी हैं।
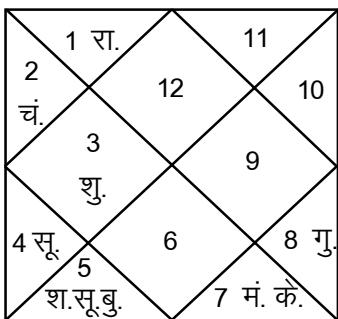
पति 28–8–1948　　　　पत्नी 1–5–1954
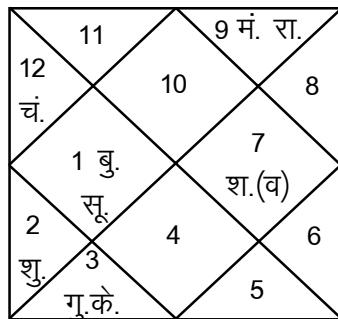
दोनों मंगली हैं। दोनों का मंगल राहु केतु के मध्य है। पति की कुंडली में मंगल अष्टम भाव में शनि से दृष्ट है तो पत्नी की कुंडली में भी में मंगल शनि से दृष्ट है। परन्तु पति पत्नी सुखी हैं। पति की कुण्डली में सप्तमेश बुध–शनि व सूर्य के साथ लग्न से षष्ठ भाव अर्थात सप्तम से द्वादश भाव में स्थित है। परन्तु शुक्र केन्द्र में मित्र, राशि में स्थित है। पत्नी की कुण्डली में मंगल गुरु से दृष्ट है व शुक्र अपनी राशि वृष में त्रिकोण में स्थित है। गुरु चंद्रमा से केन्द्र में स्थित है।

इस प्रकार और भी कई कुण्डलियां प्राप्त हो सकती हैं, जिनमें मांगलिक दोष के होते हुए भी पति–पत्नी सुखी व दीर्घ आयु को प्राप्त होते हैं। डा.बी.बी. रमन की कुंडली में भी मंगल सिंह राशि में सप्तम भाव में स्थित था। वे सुखी थे व दीर्घ आयु को प्राप्त हुए। पत्नी अभी भी जीवित है। इसलिए मंगली दोष को हमें सूक्ष्मता से समझना होगा। ऋषियों द्वारा दिये हुए परिहार के नियमों को समझना होगा।

और भी कई कुण्डलियां दी जा सकती हैं, परन्तु स्थान को ध्यान में रखते हुए हमें अन्त में लिखना होगा कि–

1. मांगलिक दोष केवल अशुभ ग्रहों का संवेदनशील भाव में स्थिति का नाम है।

2. इसलिए कुण्डली में शुक्र व सप्तमेश के बलाबल का ध्यान रखना चाहिये।

3. ग्रह भाव मध्य पर ज्यादा प्रभावी होते हैं। भाव के शुरू या अन्त के अंशों पर स्थित ग्रह भाव का प्रभाव कम देते हैं।

4. हमारे मनीषियों के द्वारा दिये हुए परिहारों का सूझबूझ के साथ प्रयोग करना चाहिए।

5. कुण्डली मिलान में केवल अष्टकूट का मिलान ही पूर्ण मिलान नहीं है। दशान्तर्दशा का मिलान, ग्रह दोष साम्य का मिलान व आयु का मिलान भी आवश्यक होता है।

6. यदि अशुभ ग्रह उच्च, स्वयं की राशि या मित्र की राशि या नवांश में उन्नत होना या दो शुभ ग्रहों के मध्य स्थित होना अशुभत्व को कम करता है। समाप्त नहीं करता।

7. यदि अशुभ ग्रह पर किसी अन्य अशुभ ग्रह का प्रभाव हो तो वह अधिक अशुभ फल देता है।

8. यदि शुभ ग्रह वक्री हो तो उसके शुभ प्रभाव पर पूर्ण भरोसा नहीं करना चाहिए।

वैधव्य परिहार

यदि कन्या की कुण्डली में विधवा योग हो तो शास्त्रों के अनुसार निम्न उपाय किये जा सकते हैं।

1. यदि नवम भाव व द्वादश भाव या उनके स्वामी बलवान हो तो कन्या विधवा नहीं होती है।

2. यदि लग्न व लग्नेश, सप्तम व सप्तमेश बलवान है और केन्द्र या त्रिकोण में शुभ ग्रह के प्रभाव में है तो विधवा योग नष्ट हो जाता है।

3. यदि किसी कुण्डली में बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमा और मंगल और सप्तमेश दूसरे की कुंडली से त्रिकोण व 3/11 भाव में स्थित है तो मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है।

4. मंगल के साथ शनि का दृष्टि युति संबंध मंगल के पाप प्रभाव को कम करता है।

5. यदि जन्म लग्न या लग्न से चतुर्थ, सप्तम, नवम अथवा द्वादश भाव में शनि स्थित हों तो मंगली दोष नहीं होता।

6. कुंभ लग्न जातक का मंगल यदि स्थिर राशि में स्थित होकर मंगली दोष उत्पन्न करे तो दांपत्य सुख में बाधक नहीं होता। स्थिर राशियां वृष चतुर्थ भाव, सिंह सप्तम भाव, कुंभ लग्न में मंगल दोष दे सकती है। मंगल से केन्द्र भाव में शुक्र की स्थिति भी मंगल दोष को निष्प्रभावी बनाती है।

7. यदि दोनों की कुण्डली में शुभ ग्रहों की दशा हो।

8. यदि किसी की भी कुंडली में दशा भुक्ति मारक या बाधक ग्रह की चल रही हो तो शादी को उस समय तक टाल देना ही उचित है।

9. कन्या को किसी योग्य ज्योतिषी के निरीक्षण में सावित्री का व्रत रखना चाहिए।

10. कन्या के श्रीमंगला चंद्रिका का स्तोत्र 108 दिन के लिए दिन में 7–21 वार दोहरना चाहिये।

11. दुर्गा स्तोत्र का पाठ भी उत्तम है।

12. वर से विवाह के पहले किसी कुम्भ या विष्णु की मूर्ति, केले के पेड़ या पीपल के पेड़ या तुलसी से विवाह का भी विधान है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि समाज में मांगलिक दोष से वैधव्य का भय ही मूल में है। मृत्यु मारक व बाधक ग्रहों की दशा भुक्ति के बिना मृत्यु हो ही नहीं सकती। परिवार में सौहार्द सहनशीलता के बिना आ नहीं सकता। इसलिये अष्टकूट मिलान के साथ–साथ दशा मिलान व ग्रह मिलान भी जरूर करना चाहिए यह सब कार्य किसी योग्य ज्योतिषी के द्वारा ही करवाने चाहिये। बुद्धि से कार्य करना चाहिये। मन मानी से दूर रहना चाहिए।

वर कन्या गुण मेलापक चक्र

कन्या	वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	चरण	4	4	1	3	4	2	2	4	3	1	4	4	4	4	1	3	4	2
	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
मेष	अ.4	28	33	28.5	18.5	21.5	22.5	26	17	19	23.5	31.5	28	21	25	15.5	11	9	13
	भ.4	34	28	29	19	21.5	14.5	18	26	27	31.5	23.5	25.5	20	18	26	21.5	20	4
	कृ.1	27.5	29	28	18	10	16.5	20	20	21	25.5	26.5	23.5	16.5	20	20	15.5	15.5	18
वृष	कृ.3	18.5	20	19	28	20	26.5	17.5	17.5	18.5	22	23	20	18.5	22	22	21	21	23.5
	रो.4	23.5	23.5	11	20	28	36	25.5	23.5	22.5	26	27	12	10.5	24.5	27	26	26	20
	मृ.2	23.5	14.5	18.5	27.5	35	28	19	24	22.5	26	19	21	19.5	15.5	24.5	23.5	26	13
मिथुन	मृ.2	27	18	22	19.5	27	20	28	33	31.5	19	12	14	23.5	19.5	28.5	31.5	34	21
	आ.4	19	27	21	18.5	24.5	26	34	28	25	12.5	20	13	23.5	29.5	21.5	24.5	24.5	27
	पुन.3	20	27	23	20.5	22.5	23.5	31.5	24	28	14.5	22.5	17	22.5	26.5	21.5	24.5	25.5	27.5
कर्क	पुन.1	22.5	29.5	25.5	22	24	25	18	10.5	14.5	28	35	29.5	16.5	20.5	14.5	18	19	21
	पुष्य 4	30.5	29.5	26.5	23	25	18	11	18	21.5	35	28	30	19.5	15.5	23.5	26	27	12
	श्ले.4	26	24.5	22.5	19	11	19	12	12	15	28.5	29	28	15	15.5	18.5	21	21	26
सिंह	मघा.4	20	20	16.5	17.5	9.5	17.5	21.5	22.5	20.5	16.5	19.5	16	28	30	27.5	16.5	16.5	21.5
	पू.फा.4	26	18	20	21	23.5	15.5	19.5	28.5	26.5	22.5	17.5	16.5	30	28	35	24	22	7.5
	उ.फा.1	16.5	26	20	21	26	24.5	28.5	20.5	21.5	17.5	25.5	19.5	27.5	35	28	17	16	13.5
कन्या	उ.फा.3	13	22.5	16.5	21	26	24.5	31.5	23.5	24.5	20	28	22	17.5	25	18	28	27	24.5
	हस्त.4	10	20	17.5	22	25	26	33	22.5	24.5	20	28	23	18.5	22.5	16	26	28	28
	चि.2	13	5	19	23.5	20	12	19	26	25.5	21	12	27	22.5	8.5	14.5	24.5	27	28

वर कन्या गुण मेलापक चक्र

कन्या↓	वर→	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	चरण	2	4	3	1	4	4	4	4	1	3	4	2	2	4	3	1	4	4
	नक्षत्र	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.आ.	उ.आ.	उ.आ.	श्रवण	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
मेष	अ.4	22.5	26.5	22.5	18.5	25.5	14	13.5	25	23.5	25	26	20	20	15	16	14.5	24.5	26.5
	भ.4	13.5	29.5	21.5	17.5	17.5	19.5	21	18	26	27.5	26	10	10	20	24	22.5	17.5	26.5
	कृ.1	27.5	15.5	19.5	15.5	19.5	25.5	24.5	18	12	13.5	11.5	25	25	27	19	17.5	19.5	11.5
वृष	कृ.3	22.5	10.5	14.5	20.5	24.5	30.5	20	13.5	7.5	12	10	23.5	29.5	31.5	23.5	20	22	14
	रो.4	19.5	15.5	9.5	15.5	29.5	23.5	14	19.5	11.5	16	17	20	24.5	24.5	30.5	27	27	19
	मृ.2	12	25	18.5	24.5	21.5	24.5	15	10	17	21.5	25	13	19	27	29.5	26	18	27
मिथुन	मृ.2	14	27	20.5	14	11	14	23	18	25	20	23.5	11.5	13	21	23.5	25.5	17.5	26.5
	आ.4	20	27	20	13.5	17	5	16	28	28	23	23	17.5	19	12	17	19	26.5	26.5
	पुन.3	20.5	28	22	15.5	21.5	7	14	27	27	22	23	17.5	18.5	14	16	18	28	27.5
कर्क	पुन.1	20.5	28	22	20.5	26	11.5	8	21	21	26	27	21	12.5	8	10	16	26	25.5
	पुष्य 4	11.5	26.5	21	19	18	21	17	11	21	26	25	13	4.5	14.5	18	24	18	27
	श्ले.4	25.5	12.5	17.5	15.5	20	26	22.5	16	8	13	13	26	17.5	19.5	11.5	17.5	21	13
सिंह	मघा.4	24.5	11.5	16.5	22.5	25.5	33	25	19	8.5	3.5	4.5	18.5	24.5	25.5	18.5	18.5	19.5	13
	पू.फा.4	10.5	25.5	18.5	24.5	23.5	25.5	19	17	24	17.5	18.5	4.5	10.5	19.5	24.5	24.5	17.5	25.5
	उ.फा.1	16.5	25.5	16.5	22.5	31.5	17.5	9.5	25	25	20	20	11.5	17.5	11.5	15.5	15.5	26.5	25.5
कन्या	उ.फा.3	16.5	25.5	16.5	18	27	13	14	29.5	29.5	24.5	24.5	16	16.5	10.5	14.5	17.5	28.5	27.5
	हस्त.4	20	26.5	18.5	20	26	13	15	27	28.5	23.5	24.5	18.5	19	8.5	13.5	16.5	26.5	27.5
	चि.4	20	19	26.5	28	11	25	27	14	22	17	18.5	15.5	16	24	16.5	19.5	10.5	19.5

वर कन्या गुण मेलापक चक्र

कन्या↓	वर→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	चरण	4	4	1	3	4	2	2	4	3	1	4	4	4	4	1	3	4	2
	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
तुला	चि.2	22.5	14.5	28.5	23.5	20	12	13	21	19.5	20.5	11.5	26.5	25.5	11.5	17.5	17.5	20	21
	स्वा.4	27.5	29.5	17.5	12.5	15.5	26	27	26	28	29	27.5	14.5	13.5	25.5	25.5	25.5	27.5	21
	वि.3	22.5	22.5	20.5	15.5	10.5	18.5	19.5	20	21	22	21	18.5	17.5	19.5	17.5	17.5	18.5	27.5
वृश्चिक	वि.1	16.5	16.5	14.5	19.5	14.5	22.5	12	12.5	13.5	19	18	15.5	21.5	23.5	21.5	17	18	27
	अनु.4	24.5	15.5	19.5	24.5	27.5	20.5	10	15	20.5	26	18	21	24.5	20.5	29.5	25	26	11
	ज्ये.4	12	18.5	24.5	29.5	22.5	22.5	12	2	5	10.5	20	26	31	23.5	16.5	12	12	24
धनु	मूल4	12	20	24.5	19	13	13	21	15	12	8	17	23.5	25	19	9.5	13	13	27
	पू.षा.4	26	18	18	12.5	18	10	18	27	27	23	13	17	19	17	25	28.5	27	13
	उ.षा.1	24.5	26	12	6.5	10.5	17	25	27	28	23	23	9	8.5	24	25	28.5	28.5	21
मकर	उ.षा.3	27	28.5	14.5	12	16	22.5	20	22	22	28	28	14	4.5	20	21	24.5	24.5	17
	श्रवण4	27	26	13.5	11	16	25	22.5	21	22	28	26	15	6.5	18.5	20	23.5	24.5	19.5
	धनि.2	20	11	26	23.5	20	12	9.5	16.5	15	21	13	27	19.5	5.5	12.5	15.5	17.5	15.5
कुंभ	धनि.2	20	11	26	30.5	27	19	12	19	17.5	12.5	4.5	18.5	25.5	19.5	18.5	17.5	19	17
	शत.4	15	21	28	32.5	25.5	27	20	12	13	6.5	14.5	20.5	26.5	20.5	12.5	11.5	8.5	25
	पू.भा.3	18	25	20	24.5	31.5	31.5	24	17	18	12	20	12.5	19.5	25.5	16.5	15.5	15.5	17.5
मीन	पू.भा.1	14.5	21.5	16.5	19	26	26	25.5	18	18	17	25	17.5	17.5	23.5	14.5	16.5	16.5	18.5
	उ.भा.4	24.5	16.5	18.5	21	26	18	17.5	25.5	28	27	19	21	18.5	16.5	25.5	27.5	26.5	9.5
	रेव.4	25	24.5	11.5	14	17	26	25.5	24.5	26.5	25.5	27	14	13	23.5	23.5	25.5	26.5	19.5

वर कन्या गुण मेलापक चक्र

वर→	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
चरण	2	4	3	1	4	4	4	4	1	3	4	2	2	4	3	1	4	4
नक्षत्र	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.आ.	उ.आ.	उ.आ.	श्रवण	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
चि.2	28	27	34.5	23.5	6.5	20.5	27	14	22	25	26.5	23.5	18	26	18.5	12.5	3.5	12.5
स्वा.4	28	28	20	9	21.5	16.5	23	27	19	22	23	26.5	21	20	25	19	19.5	12.5
वि.3	34.5	19	28	17	16	20.5	27	22	14	17	17	30	24.5	26	20	14	13	4.5
वि.1	22.5	7	16	28	27	31.5	21.5	16.5	8.5	12	12	25	24	25.5	19.5	19	18	9.5
अनु.4	6.5	21.5	16	28	28	31	15.5	13.5	21.5	25	26	12	11	21	24.5	24	18	27
ज्ये.4	19.5	14.5	19.5	31.5	30	28	14	16.5	16.5	20	20	25	24.5	18	10	9.5	21	21
मूल4	26	21	26	22.5	15.5	15	28	28	26.5	15	15	20	28.5	21.5	14.5	16	25	26.5
पू.आ.4	13	27	21	17.5	15.5	17.5	28	28	34	22.5	23	6	14.5	23.5	28.5	30	23	31
उ.आ.1	21	19	13	9.5	23.5	17.5	26.5	34	28	16.5	14.5	15	23.5	23.5	29.5	31	31	23
उ.आ.3	24	22	16	13	27	21	16	23.5	17.5	28	26	26.5	17	17	23	30.5	30.5	22.5
श्रवण 4	26.5	22	17	14	27	22	17	23	14.5	25	28	28	18.5	18	21	28.5	29.5	22.5
धनि.2	22.5	24.5	29	26	12	26	21	7	16	26.5	27	28	18.5	23.5	19	26.5	15.5	22.5
धनि.2	18	20	24.5	25	11	25	29.5	15.5	24.5	18	18.5	19.5	28	33	28.5	18	7	14
शत.4	26	19	26	26.5	21	19	22.5	24.5	24.5	18	18	24.5	33	28	19	8.5	17	16
पू.भा.3	18.5	26	20	20.5	26.5	11	15.5	29.5	30.5	24	23.5	20	28.5	19	28	17.5	22.5	20
पू.भा.1	11.5	19	13	19	25	9.5	15	29	30	29.5	28.5	25.5	17	7.5	16.5	28.5	33	30.5
उ.भा.4	2.5	19.5	12	18	19	21	24	22	30	29.5	29.5	14.5	6	16	21.5	33	28	35
रेव.4	12.5	11.5	4.5	10.5	27	22	26.5	29	21	20.5	21.5	22.5	14	16	18	29.5	34	28

लेखक का परिचय

डा. कुरसीजा एस.सी.

एम. ए., डी., एच., एस., एन., डी.

डा. कुरसीजा जाने माने होम्योपैथिक परामर्शदाता हैं। उनकी होम्योपैथिक क्षेत्र में सेवाओं को स्वीकारते हुए बोर्ड ऑफ होम्योपैथिक सिस्टम ऑफ मेडिसन दिल्ली सरकार ने उन्हे डा. **''युद्धवीर सिंह''** की उपाधी से अलंकृत किया। वे दिल्ली होम्योपैथिक मैडिकल एसोसिएशन दिल्ली की पत्रिका ''हैनिमैनियन होम्योपैथिक संदेश'' के फाउन्डर चीफ एडिटर रहे हैं। आजकल डी. एस, एस, मेडिकल ऐसोसिएश दिल्ली के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

पुरानी बिमारियों के निदान करने में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के लिए ज्योतिष सीखा व अपनाया। उन्होंने 1993 में भारतीय विद्या भवन दिल्ली से विशारद पास किया व उनका नाम भारतीय विद्या भवन की ज्योतिष संकाय में नाम आ गया और उन्होंने ज्योतिष पढ़ाना आरम्भ किया। इंडियन कॉउसिंल ऑफ एस्ट्रोलोजिक साइंसंस (पं.) नई दिल्ली चेप्टर I के साथ 2001, तक जुड़े रहे व पढ़ाते रहे। उन्होंने दिल्ली चेप्टर I में बढ़ चढ़ कर कार्य किया व दिल्ली चेप्टर I के न्यूज लेटर के कार्यकारी सम्पादक पद पर कार्यरत रहे। उनकी सेवा को स्वीकारते हुए उन्हें **''कोविद''** की उपाधि दी गई।

आजकल वे अखिल, भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी) दिल्ली के संस्थापक सदस्य व जनरल सैक्रेटरी, के पद पर कार्यरत हैं। संघ के लिये विभिन्न पुस्तकें लिख रहे हैं।

उनकी **''प्रेडिक्शन थ्रू होरेरी''** प्रकाशित हो चुकी है। ''कुण्डली मिलान–सुखी दाम्पत्य जीवन का आधार'' व मेडिकल एस्ट्रोलोजी फार एस्ट्रोलोजर्स'' ''मेडिकल एस्ट्रोलॉजी फार विगनर्स'' ''सरल अष्ट–कूट मिलान'' ''होरेरी ''सरल दशान्र्तदशा''